LATEST EDITON

INFUSION NOTES
WHEN ONLY THE BEST WILL DO

राजस्थान 3rd ग्रेड

(REET मुख्य परीक्षा हेतु)

2 LEVEL

HANDWRITTEN NOTES

भाग-4b सामाजिक अध्ययन + शिक्षण विधियाँ

INFUSION NOTES

WHEN ONLY THE BEST WILL DO

राजस्थान 3rd ग्रेड

REET LEVEL - 2

मुख्य परीक्षा हेतु

भाग – 4 (B)

सामाजिक अध्ययन + शिक्षण विधियाँ

प्रस्तावना

*प्रिय पाठकों, प्रस्तुत नोट्स "**राजस्थान 3rd ग्रेड (REET मुख्य परीक्षा लेवल – 2 हेतु)** को एक विभिन्न अपने अपने विषयों में निपुण अध्यापकों एवं सहकर्मियों की टीम के द्वारा तैयार किया गया है / ये नोट्स पाठकों को **राजस्थान कर्मचारी चयन बोर्ड, जयपुर (RSMSSB)** द्वारा आयोजित करायी जाने वाली परीक्षा **"राजस्थान 3rd ग्रेड (REET मुख्य परीक्षा लेवल – 2)" की** परीक्षा में पूर्ण संभव मदद करेंगें* **/**

अंततः सतर्क प्रयासों के बावजूद नोट्स में कुछ कमियों तथा त्रुटियों के रहने की संभावना हो सकती हैं / अतः आप सूचि पाठकों का सुझाव सादर आमंत्रित हैं/

प्रकाशकः

INFUSION NOTES

जयपुर, 302017 (RAJASTHAN)

मो : 01414045784, 8233195718

ईमेल : contact@infusionnotes.com

वेबसाइट : http://www.infusionnotes.com

Online Order at ➡ https://bit.ly/3rd-grade-mains-notes

Whatsapp Link – https://wa.link/hx3rcz

Contact us at – 8233195718 + 8504091672

मूल्य : ₹

संस्करण : नवीनतम (2022)

सामाजिक अध्ययन

प्राचीन भारत की सभ्यता एवं संस्कृति

1.	सिंधु घाटी सभ्यता	1
2.	वैदिक संस्कृति	5
3.	बौद्ध एवं जैन धर्म	10
4.	महाजनपद काल	16
5.	मौर्य साम्राज्य	20
	• मौर्य साम्राज्य की राजनीतिक एवं प्रशासनिक व्यवस्थाएँ	
	• सम्राट अशोक का धम्म एवं अभिलेख	
6.	दिल्ली सल्तनत एवं मुगल साम्राज्य	28
	• दिल्ली सल्तनत का विस्तार	
	• मुगल साम्राज्य एवं राजपूत राज्यों के साथ संबंध	
	• सल्तनत एवं मुगल कालीन प्रशासनिक व्यवस्थाएँ	
7.	पृथ्वी राज चौहान	53
8.	भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन	55

विश्व भूगोल

1. पृथ्वी – गतियाँ 83
   - अक्षांश एवं देशांतर
2. वायुमण्डल 86
   - संघटन
   - संरचना
   - पवनें एवं वायुमण्डलीय संचरण
3. महासागर 90
   - ज्वार-भाटा
   - धाराएँ
   - जल थल वितरण
4. संसार की प्रमुख वनस्पति वन्य जीव 102
5. राजस्थान के कृषि आधारित उद्योग 104
6. विश्व – कृषि के प्रकार, प्रमुख औद्योगिक प्रदेश 107

भारतीय संविधान

1. संविधान निर्माण की प्रक्रिया एवं विशेषताएँ 112
2. उद्देशिका (प्रस्तावना) 119
3. मूल अधिकार 121
4. नीति निर्देशक तत्व 125

5. मूल कर्तव्य 127

6. सरकार का गठन व कार्य 127

- विधायिका
- कार्य पालिका
- न्यायपालिका

7. स्थानीय शासन 156

- ग्रामीण एवं नगरीय
- 73 वां एवं 74 वां संविधान संशोधन

8. भारतीय लोकतांत्रिक प्रक्रिया एवं उसमें महिला प्रतिनिधित्व 166

9. भारत की संघीय व्यवस्था 169

10. केन्द्र राज्य संबंध 170

भारतीय अर्थव्यवस्था

1. अर्थव्यवस्था के क्षेत्रक 174

2. औपनिवेशिक काल में भारतीय अर्थव्यवस्था 179

3. उदारीकरण, निजीकरण, वैश्वीकरण 181

4. विश्व व्यापार संगठन 183

5. निर्धनता व खाद्य सुरक्षा 184

6. मुद्रा एवं बैंकिग 190

- मुद्रा के आधुनिक रूप
- साख की विभिन्न स्थितियाँ

- स्वयं सहायता समूह

7. उपभोक्ता के अधिकार – उपभोक्ता एवं उसके अधिकार 215

8. भारतीय अर्थव्यवस्था का विकास 217

- राष्ट्रीय विकास एवं मानव विकास
- राष्ट्रीय आय

9. राजस्थान में कृषि एवं विपणन 241

- कृषि उपज मंडी
- सार्वजनिक वितरण प्रणाली

10. सामाजिक अध्ययन की शिक्षण विधियाँ 254

- सामाजिक अध्ययन की शिक्षण विधियाँ
- सामाजिक अध्ययन शिक्षण के उपागम
- सामाजिक अध्ययन शिक्षण में चुनौतियाँ
- सामाजिक अध्ययन शिक्षण में अधिगम सहायक सामग्री एवं उपयोग
- सामाजिक अध्ययन शिक्षण की मूल्यांकन विधियाँ
- निदानात्मक एवं उपचारात्मक शिक्षण

सामाजिक अध्ययन

प्राचीन भारत की सभ्यता एवं संस्कृति

अध्याय – I

सिंधु घाटी सभ्यता

- यह दक्षिण एशिया की प्रथम नगरीय सभ्यता थी ।
- इस सभ्यता को सबसे पहले हड़प्पा सभ्यता नाम दिया गया ।
- सबसे पहले 1921 में हड़प्पा नामक स्थल की खोज दयाराम साहनी द्वारा की गई थी।
- सिंधु घाटी सभ्यता को अन्य नामों से भी जानतें हैं ।
- सैंधव सभ्यता- जॉन मार्शल के द्वारा कहा गया
- सिंधु सभ्यता - मार्टियर व्हीलर के द्वारा कहा गया ।
- वृहत्तर सिंधु सभ्यता – ए. आर-मुगल के द्वारा कहा ।
- सरस्वती सभ्यता भी कहा गया ।
- मेलूहा सभ्यता भी कहा गया ।
- कांस्यकालीन सभ्यता भी कहा गया ।
- यह सभ्यता मिश्र एवं मेसोपोटामिया सभ्यताओं के समकालीन थी।
- इस सभ्यता का सर्वाधिक फैलाव घग्घर हाकरा नदी के किनारे हैं। अतः इसे सिंधु सरस्वती सभ्यता भी कहते हैं ।
- 1902 में लॉर्ड कर्जन ने जॉन मार्शल को भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण विभाग का महानिदेशक बनाया।
- जॉन मार्शल को हड़प्पा व मोहनजोदड़ों की खुदाई का प्रभार सौंपा गया।
- 1921 में जॉन मार्शल के निर्देशन पर दयाराम साहनी ने हड़प्पा की खोज की।
- 1922 में राखलदास बनर्जी ने मोहनजोदड़ों की खोज की।
- हड़प्पा नामक पुरास्थल सिंधु घाटी सभ्यता से सम्बद्ध हैं ।
- 20 सितम्बर 1924 को जॉन मार्शल ने द इलस्ट्रेटेड लन्दन न्यूज' के माध्यम से इस सभ्यता की खोज की घोषणा की।

सिंधु सभ्यता की प्रजातियाँ –

- प्रोटो-आस्ट्रेलायड - सबसे पहले आयी
- भूमध्यसागरीय - मोहनजोदड़ों की कुल जनसंख्या में सर्वाधिक
- मंगोलियन – मोहनजोदड़ों से प्राप्त पुजारी की मूर्ति इसी प्रजाति की हैं ।
- अल्पाइन प्रजाति ।

सिंधु सभ्यता की तिथि

- कार्बन 14 (C^{14}) - 2500 से 1750 ई.पू.
- ह्विलेर - 2500-1700 ई.पू.
- मार्शल - 3250-2750 ई.पू.

इस सभ्यता का विस्तार

- इस सभ्यता का विस्तार पाकिस्तान और भारत में ही मिलता है।

पाकिस्तान में सिंधु सभ्यता के स्थल

- सुत्कांगेडोर
- सोत्काकोह
- बालाकोट
- डाबर कोट

सुत्कांगेडोर- इस सभ्यता का सबसे पश्चिमी स्थल है जो दाश्क नदी के किनारे अवस्थित है। इसकी खोज ऑरेल स्टाइन ने की थी।

- सुत्कांगेडोर को हड़प्पा के व्यापार का चौराहा भी कहते हैं ।

भारत में सिंधु सभ्यता के स्थल,

- **हरियाणा**- राखीगढ़ी, सिसवल कुणाल, बनावली, मितायल, बालू
- **पंजाब** – कोटलानिहंग खान चक्र 86 बाड़ा, संघोल, टेर मानरा
  रोपड़ (रूपनगर) - स्वतन्त्रता प्राप्ति के बाद खोजा गया पहला स्थल
- **कश्मीर** - माण्डा
  चिनाब नदी के किनारे
  सभ्यता का उत्तरी स्थल
- **राजस्थान** - कालीबंगा, बालाथल

तरखान वाला डेरा

- **उत्तर प्रदेश**- आलमगीरपुर
  सभ्यता का पूर्वी स्थल
  - माण्डी
  - बड़गाँव
  - हलास
  - सनौली

- **गुजरात**
  धौलावीरा, सुरकोटड़ा, देसलपुर रंगपुर, लोथल, रोजदिख्वी, तेलोद, नगवाड़ा, कुन्तासी, शिकारपुर, नागेश्वर, मेघम प्रभासपाटन भोगन्नार

- **महाराष्ट्र**- दैमाबाद
  सभ्यता की दक्षिणतम सीमा
  फैलाव- त्रिभुजाकार
  क्षेत्रफल- 1299600 वर्ग किलो मीटर

प्रमुख स्थल एवं विशेषताएँ

- **हड़प्पा**
  रावी नदी के किनारे पर स्थित इस स्थल की खोज दयाराम साहनी ने की थी। खोज - वर्ष 1921 में
  उत्खनन-
- 1921-24 व 1924-25 में दयाराम साहनी द्वारा।
- 1926-27 से 1933-34 तक माधव स्वरूप वत्स द्वारा
- 1946 में मार्टीयर ह्वीलर द्वारा
- इसे 'तोरण द्वार का नगर तथा 'अर्द्ध औद्योगिक नगर' कहा जाता है।
- पिगट ने हड़प्पा एवं मोहनजोदड़ों को इस सभ्यता की जुड़वा राजधानी कहा है। इन दोनों के बीच की दूरी 640 किलोमीटर है।
- 1826 में चार्ल्स मैसन ने यहाँ के एक टीले का उल्लेख किया, बाद में उसका नाम ह्वीलर ने MOUND-AB दिया।
- हड़प्पा के अन्य टीले का नाम MOUND-F है।
- हड़प्पा से प्राप्त कब्रिस्तान को R-37 नाम दिया।
- भारत में चाँदी की उपलब्धता के प्राचीनतम साक्ष्य हड़प्पा सभ्यता से मिलते हैं।
- यहाँ से प्राप्त समाधि को HR नाम दिया
- हड़प्पा के अवशेषों में दुर्ग, रक्षा प्राचीन निवास गृह चबूतरा, अन्नागार तथा ताम्बे की मानव आकृति महत्त्वपूर्ण हैं।

मोहनजोदड़ों

- सिंधु नदी के तट पर मोहनजोदड़ों की खोज सन् 1922 में राखलदास बनर्जी ने की थी। उत्खनन - राखलदास बनर्जी (1922-27)
  - मार्शल
  - जे.एच. मैके
  - जे.एफ. डेल्स
- मोहनजोदड़ों का नगर कच्ची ईटों के चबूतरे पर निर्मित था।
- मोहनजोदड़ों सिन्धी भाषा का शब्द, अर्थ- मृतकों का टीला मोहनजोदड़ों को स्तूपों का शहर भी कहा जाता है।
- बताया जाता है कि यह शहर बाढ़ के कारण सात बार उजड़ा एवं बसा।
- यहाँ से यूनीकॉर्न प्रतीक वाले चाँदी के दो सिक्के मिले हैं।
- वस्त्र निर्माण का प्राचीन साक्ष्य यहाँ से मिलता है। कपास के प्रमाण - मेहरगढ़
- सुमेरियन नाव वाली मुहर यहाँ से मिली है।
- मोहनजोदड़ों की सबसे बड़ी इमारत संरचना यहाँ से प्राप्त अन्नागार है। (राजकीय भण्डारागार)
- यहाँ से एक 20 खम्भों वाला सभा भवन मिला है। मैके ने इसे 'बाजार' कहा है।
- बहुमंजिली इमारतों के साक्ष्य, पुरोहित आवास, पुरोहितों का विद्यालय, पुरोहित राजा की मूर्ति, कुम्भकारों की बस्ती के प्रमाण भी मोहनजोदड़ों से मिले हैं।
- मोहनजोदड़ों का शाब्दिक अर्थ मृतकों का टीला है।
- मूर्ति पूजा का आरम्भ पूर्व आर्य काल से माना जाता है।
- बड़ी संख्या में कुओं की प्राप्ति ।
- 8 कक्षों वाला विशाल स्नानागार भी यहीं से प्राप्त हुआ है।

कालीबंगा-

- कालीबंगा की खोज अमलानन्द घोष द्वारा गंगानगर में की गयी थी ।
- सरस्वती नदी (वर्तमान घग्घर के तट पर)
- कालीबंगा वर्तमान में हनुमानगढ़ में है ।
- उत्खनन - बी.बी लाल, वी. के. थापड़ 1953 में
  कालीबंगा - काले रंग की चूड़ियाँ
- कालीबंगा - सैंधव सभ्यता की तीसरी राजधानी
- कालीबंगा से एक साथ दो फसलों की बुवाई तथा जालीदार जुताई के साक्ष्य मिले हैं ।
- कालीबंगा से प्राप्त दुर्ग दो भागों में बंटा हुआ- द्विभागीकरण है ।
- सड़कों को पक्का बनाने का प्रमाण कालीबंगा से प्राप्त हुआ है ।
- युग्म शवाधान का साक्ष्य शवों का अन्तिम संस्कार की तीनों विधियों के साक्ष्य यहाँ से प्राप्त हुए हैं ।
- मृण पट्टिका पर उत्कीर्ण सींगयुक्त देवता की मुहर कालीबंगन से प्राप्त हुई है ।
- भूकम्प आने के प्राचीनतम प्रमाण यहीं से प्राप्त हुए हैं।
- वृषभ की ताम्रमूर्ति भी कालीबंगा से प्राप्त हुई है ।
- यहाँ से प्राप्त लेखयुक्त बर्तन से स्पष्ट होता है कि इस सभ्यता की लिपि दाईं से बाईं ओर लिखी जाती थी।
- लेखन कला की प्रणाली विकसित करने वाली प्रथम प्राचीन सभ्यता सुमेरियन सभ्यता थी ।

चन्हूदड़ों -

- खोज एन. जी. मजूमदार
- उत्खनन मैंके ने किया ।
- सिंधु सभ्यता का यह औद्योगिक शहर था ।
- यहाँ मणिकारी, मुहर बनाने, भार-माप के बटखड़े बनाने का काम होता था।
- सिंधु संस्कृति के बाद विकसित झूकर- झांगर संस्कृति के अवशेष यहाँ से ही मिले हैं ।

लोथल

- खोज एस. आर. राव (रंग नाथ राव)1954 में की थी
- लघु हड़प्पा
- लघु मोहनजोदड़ों की संज्ञा दी गई है । और लोथल के पूर्वी भाग में एक गोदीबाड़ा का साक्ष्य मिला है ।
- बन्दरगाह या जल भण्डार या गोदीबाड़ा यहाँ की सबसे महत्त्वपूर्ण खोज है।
- लोथल का बन्दरगाह ही सिंधु सभ्यता की सबसे बड़ी इमारती संरचना है।
- लोथल से वृत्ताकार या चतुर्भुजाकार आग्निवेदी पाई गई हैं ।
- लोथल का मिश्र एवं मेसोपोटामिया के साथ सीधा व्यापार होता था।
- भारत में उत्तरी काले पॉलिशकृत मृदभाण्ड द्वितीय नगरीकरण के प्रारम्भ के प्रतीक माने जाते हैं ।

धौलावीरा

- खोज जे.पी. जोशी द्वारा - (1967-68) में मनहर एवं मानसेहरा नदियों के बीच कादिर द्वीप पर की खोज की।
- धौलावीरा एक आयताकार नगर था । जो तीन भागों में विभक्त था।
- धौलावीरा से जल-प्रबंधन के साक्ष्य प्राप्त हुये हैं ।
- भारत के विशालतम सिंधु सभ्यता स्थल धौलावीरा तथा राखीगढ़ी है।
- धौलावीरा से घोड़े की कलाकृतियों के अवशेष मिले हैं । सिंधु सभ्यता का यह औद्योगिक शहर था ।

रोजदी

- रोजदी से हाथी के अवशेष मिले हैं ।
- यहाँ मणिकारी, मुहर बनाने, भार-माप के बटखड़े बनाने का काम होता था।
- सिंधु संस्कृति के बाद विकसित झूकर- झांगर संस्कृति के अवशेष यहाँ से ही मिले।

सुरकोटड़ा

- सुरकोटड़ा से घोड़े की अस्थियों के साक्ष्य मिले हैं।
- मिट्टी से बनी घोड़े की आकृति- मोहनजोदड़ों
- घोड़े की हड्डियां- सुरकोटड़ा
- तीन मृणमूर्तियाँ - लोथल

- शासन का कार्य एक या कई सरदारों के हाथों में दिया जाता था। उन्हें राजन् 'गणराजन्', या 'संघमुख्य' कहते थे। राजन् उपाधि का कभी-कभी राज्य के सभी प्रधान व्यक्तियों के लिए प्रयोग होता था।
- लिच्छवियों में हम 7707 राजाओं के होने की बात सुनते हैं। एक बौद्ध ग्रन्थ के साक्ष्य के अनुसार लोग बारी-बारी से राज्य करते थे।
- राजन् के अतिरिक्त अन्य दूसरे अधिकारी भी थे जिन्हें उपराजन्, सेनापति भाण्डागारिक आदि नामों से जाना जाता था।

अध्याय – 5
मौर्य साम्राज्य

• मौर्य साम्राज्य की राजनीतिक एवं प्रशासनिक व्यवस्थाएँ

राजनीतिक इतिहास

- शासन काल चतुर्थ शताब्दी ई.पू. से द्वितीय शताब्दी ई.पू. तक (321-185 ई.पू)
- स्थापना चन्द्रगुप्त मौर्य द्वारा आचार्य चाणक्य (विष्णुगुप्त) के सहयोग से। (मगध में) की।
- मौर्य शासन से पहले मगध पर नंद वंश के शासक धनानन्द का शासन था।
- मौर्य राजवंश ने लगभग 137 वर्ष तक भारत में राज किया।
- राजधानी पाटलिपुत्र (पटना)
- साम्राज्य 52 लाख वर्ग किलोमीटर तक फैला हुआ था।

आचार्य चाणक्य

- जन्म तक्षशिला में (आचार्य)
- अन्य नाम विष्णुगुप्त, कौटिल्य
- चन्द्रगुप्त का प्रधानमंत्री तथा प्रधान पुरोहित आचार्य चाणक्य थे।
- पुराणों में चाणक्य को "द्विजर्षभ" कहा गया है जिसका मतलब है श्रेष्ठ ब्राह्मण
- चन्द्रगुप्त मौर्य की मृत्यु के बाद भी बिन्दुसार के समय भी प्रधानमंत्री बना रहा (कुछ समय के लिए)
- चाणक्य तक्षशिला विश्वविद्यालय में आचार्य रहे थे।
- इन्होंने अर्थशास्त्र नामक पुस्तक की रचना की।
- अर्थशास्त्र मौर्यकालीन साम्राज्य की राजव्यवस्था एवं शासन प्रणाली पर प्रकाश डालता है।
- अर्थशास्त्र में 15 अधिकरण तथा 180 प्रकरण हैं।

चन्द्रगुप्त मौर्य (321 – 298 ई.पू.)

- चन्द्रगुप्त मौर्य 321 ई.पू. धनानन्द को हरा कर मगध का शासक बना।

- इसका 12वाँ शिलालेख धार्मिक सहिष्णुता को दर्शाता है।
- अशोक बौद्ध धर्म का अनुयायी था।
- इसके शासन काल में तृतीय बौद्ध संगीति का आयोजन पाटलिपुत्र में हुआ।
- अशोक महान द्वारा प्रचारित की गई नीतिगत शिक्षा को अशोक का धम्म कहा गया।
- अशोक द्वारा धर्म प्रचार के लिए भेजे गये प्रचारक -

  सोन एवं उत्तरा- स्वर्णभूमि में
  महेन्द्र एवं संघमित्रा- श्रीलंका

महारक्षित - यवन प्रदेश
रक्षित - वनवासी (उ. कनाडा)

• सम्राट अशोक का धम्म एवं अभिलेख

- संसार के इतिहास में अशोक का यश उसके राज्य विस्तार और शासन की क्षमता के कारण नहीं, अपितु उसके उच्च धार्मिक आदर्श उसके प्रति अशोक की अनुपम आस्था और उसको व्यवहार में लाने के लिए योग्य व्यवहार पर अवलम्बित है।
- **अशोक का धर्म क्या था**
- अशोक का धर्म क्या था, यह एक अत्यन्त विवादास्पद प्रश्न है और विभिन्न इतिहासकारों ने इस पर अपने विभिन्न मत प्रकट किये हैं।
- हेरास का कहना है कि अशोक ब्राह्मणधर्म का अनुयायी था।
- डॉ. टॉमस का कथन है कि वह जैनधर्म में विश्वास करता था। .
- डॉ. फ्लीट के अनुसार, उसका धर्म राजधर्म था। । सेनार्त तथा भण्डारकर महोदय का विचार है कि वह बौद्धधर्म को मानने वाला था।
- डॉ. स्मिथ तथा डॉ. आर. के. मुखर्जी ने उसके धर्म को सार्वभौम धर्म माना है, जिनमें सभी धर्मों के अच्छे-अच्छे गुण सन्निहित थे और जो किसी भी एक धर्म की सीमा में नहीं समा सकता था।
- वास्तव में अशोक का धर्म कोई संकीर्ण तथा साम्प्रदायिक धर्म नहीं था। ऊपर जिन विभिन्न मतों का उल्लेख किया गया है, उन सभी में सत्य का थोड़ा बहुत अंश विद्यमान है; लेकिन सबसे अधिक सत्य कौन-सा मत है, इसका पता लगाने के लिए अशोक के धार्मिक विचारों के क्रमागत विकास का पता लगाना पड़ेगा। वस्तुतः अशोक के धार्मिक विचारों में धीरे-धीरे परिवर्तन हुआ था। अतएव शुरू से अन्त तक उसके धार्मिक कार्यकलापों का अध्ययन करने के पश्चात् ही हम उसके वास्तविक धर्म को जान सकते हैं।
- अशोक के धार्मिक जीवन और विचारों पर कलिंग के युद्ध का बड़ा ही महत्त्वपूर्ण प्रभाव पड़ा। इस युद्ध का अशोक के हृदय पर इतना गहरा असर पड़ा कि उसका धर्म ही बदल गया और वह बौद्ध धर्म का अनुयायी हो गया। इसके पूर्व अशोक शैव था और उसे नरसंहार तथा पशुबलि से कोई विरोध नहीं था। हजारों पशु उसके भोजन के लिए नित्य मारे जाते थे। राजतरंगिणी के लेखक कल्हण ने भी इस बात को स्वीकार किया है। उसने लिखा है कि अशोक आरम्भ में हिन्दू धर्मानुयायी था। वह ब्राह्मणों का आदर-सत्कार करता था और उनमें भारी श्रद्धा रखता था। सम्राट बनने के आठ वर्ष बाद तक उसकी धार्मिक स्थिति इसी प्रकार की रही थी।
- राज्यारोहण के नवें वर्ष उसने कलिंग के शक्तिशाली राज्य पर आक्रमण किया। भीषण संग्राम और भयानक नर संहार के पश्चात् उसे विजय प्राप्त हुई। इस युद्ध में लगभग एक लाख व्यक्ति मारे गये, डेढ़ लाख बन्दी बनाये गये और सहस्रों घायल हुए। घायलों की चीख पुकार, विधवाओं के विलाप और अनाथ बालकों के करुण क्रन्दन का उस पर भारी प्रभाव पड़ा। उसका हृदय करुणा से ओत-प्रोत हो गया। उसने इस भीषण रक्तपात और जनसंहार का प्रमुख कारण अपने आप को ही माना तथा भविष्य में युद्ध न करने का दृढ़ निश्चय किया। इसके कुछ समय पश्चात ही अशोक बौद्ध भिक्षु उपगुप्त के सम्पर्क में आया और उसकी आचरण की पवित्रता, विचारों तथा महानता से बहुत प्रभावित हुआ। उसके संसर्ग से बौद्धधर्म में अशोक की रुचि बढ़ गयी और उसने बौद्ध मत ग्रहण कर लिया। पहले कुछ इतिहासकारों को अशोक को बौद्ध धर्मावलम्बी होने में सन्देह था। किन्तु उसके बौद्ध होने के कई स्पष्ट

प्रमाण मिलते हैं। उसी के लेखों से स्पष्ट है कि वह एक बड़ा ही उत्साही बौद्ध था।

- बौद्ध ग्रन्थ दीपवंश और महावंश में स्पष्ट कहा गया है कि उसने एक बाल पंडित से बौद्ध धर्म की दीक्षा ली थी। चीनी यात्री ह्वेनसांग ने भी अशोक के बौद्ध होने की परम्परा का उल्लेख किया है। भाबू के लेख में उसने अपने को बौद्ध धर्म तथा संघ का भक्त बतलाया है। सारनाथ के लेख में उसने अपने को संघ रक्षक कहा है तथा संघ में फूट डालने वालों के लिए दण्ड निश्चित किया है। एक स्थल पर कहा गया है कि दो वर्षों तक अशोक ने केवल उपासक की भांति जीवन व्यतीत किया और धर्म के कार्यों में रुचि नहीं दिखाई। उसके बाद वह बौद्ध धर्म में सम्मिलित हो गया। इसके बाद ही उसने बौद्ध तीर्थ स्थानों की यात्रा की स्तूप बनवाने का कार्य शुरू किया, यज्ञादि बन्द करवा दिये तथा बौद्ध धर्मावलम्बियों की एक सभा का आयोजन किया। इन सारी बातों से यह स्पष्ट हो जाता है कि अशोक बौद्ध धर्म का पक्का उपासक था।

अशोक के धर्म की विशेषताएँ

- अशोक ने धार्मिक क्रियाकलाप कर्मकाण्ड और अनुष्ठानों पर जोर नहीं दिया। उसने चरित्र तथा आचरण की शुद्धता और कर्म की पवित्रता पर जोर दिया। एक लेख में उसने इन्द्रियविजय, विचारों की शुद्धता, कृतज्ञता और दृढ़ भक्ति पर बल दिया है। एक अन्य लेख में दया, दान, सत्य, शौच को श्रेष्ठ बतलाया गया है। । इसी प्रकार उसने क्रोध, अहंकार, ईर्ष्या आदि कुवृत्तियों का दमन करने का उपदेश दिया है। किन्तु अशोक का धर्म कोरे सिद्धांत तक ही सीमित नहीं था।
- उसने धर्म के व्यावहारिक रूप को भी सामने रखा। माता-पिता, बन्धु-बान्धव, मित्र, साथी, गुरु, नौकर, दास सभी की सेवा तथा भक्ति उसके धर्म के मूल मंत्र थे।
- उसका उपदेश था कि गृहस्थों को चाहिए कि वे ब्राह्मणों तथा श्रमणों का आदर करें तथा पशुओं तक के साथ दया का बर्ताव करें। । अशोक के धर्म की सबसे बड़ी विशेषता सहिष्णुता की भावना थी। वह संसार की सभी जातियों और धर्मों में समन्वय स्थापित करना चाहता था।
- उसका बारहवां शिलालेख इसी बात का सबूत है। उसने पारस्परिक सहिष्णुता तथा श्रद्धा पर विशेष जोर दिया और इन भावनाओं के उत्थान के लिये चार तरीकों का प्रतिपादन किया। वे थे

(i) सभी धर्मों के मूल तत्त्वों की अभिवृद्धि करना,

(ii) किसी धर्म की निन्दा नहीं करना और सभी धर्मों की आधारभूत एकता पर जोर देना।

(iii) विभिन्न धर्म के लोगों को परस्पर मिलाना और आपस में विचार विनिमय करना।

अशोक के शिलालेख (Edicts of Ashoka) –

अशोक मौर्य वंश का प्रसिद्द शासक था, इसे अशोक महान भी कहा जाता है । अशोक के अभिलेखों को तीन भागों में बांटा गया है ।

शिलालेख, स्तंभलेख व गुहालेख।

भारत में शिलालेख का प्रचलन सर्वप्रथम अशोक ने किया। अशोक के शिलालेखों की खोज **1750 ई.** में **टी फैंथेलर** ने की, इनकी संख्या 14 है। परन्तु अशोक के अभिलेखों को पढ़ने में पहली सफलता 1837 ई० **जेम्स प्रिंसेप** को मिली।

<u>अशोक के प्रमुख शिलालेख व उनमें वर्णित विषय :-</u>

पहला शिलालेख :-

इस लेख को **गिरनार संस्करण** भी कहा जाता है। इसमें पशुबलि की निंदा की गयी और उसे निषेध किया गया है। ऐसे समाज जिनमें पशु वध होता हो, पर भी प्रतिबन्ध लगाया। इसमें अशोक ने कहा है कि अभी राजकीय पक्षाला में एक हिरण व दो मोर मारे जाते हैं। भविष्य में यह भी समाप्त कर दिया जायेगा।

गई। गद्दी के कई दावेदार सामने आये जिनमें से इन्द्र सिंह को औरंगजेब ने मान्यता दी परन्तु मारवाड़ के राठौड़ सरदारों एवं रानी के विरोध के कारण वह सत्ता पर अधिकार नहीं कर पाया। और इसी समय जसवन्त सिंह की दो गर्भवती रानियों को पुत्र उत्पन्न हुए।

इनको लेकर दुर्गादास तथा शिशुओं की माताएँ औरंगजेब के पास दिल्ली पहुँची। ताकि अपना दावा पेश कर सकें। परन्तु औरंगजेब ने रियासत को विभाजित करने का निर्णय ले लिया था।

फलतः इस निर्णय का विरोध करते हुए दुर्गादास एक राजकुमार (अजीत सिंह) के साथ भाग गया। तथा राठौड़ों ने अजीत सिंह को उत्तराधिकार मान लिया जबकि दूसरे बच्चे को औरंगजेब नए मुसलमान बनाकर मुहम्मदी राज नाम दिया।

औरंगजेब ने समस्या समाधान में अदुरदर्शिता दिखाते हुए मारवाड़ को मुग़ल साम्राज्य में मिलाने का निश्चय किया। साथ ही मारवाड़ की राजधानी जोधपुर पर अधिकार कर लिया। वहाँ मन्दिर तोड़ने के लिए मुहतसिब भि तैनात कर दिए गए। और अप्रैल 1679 ई. में जजिया कर को पुनः लगा दिया और जसवन्त सिंह का सिंहासन 56 लाख रूपये में नागौर को बेंच दिया।

पीढ़ियों से मुगलों के लिए अपना रक्त बहा रहे राजपूतों के साथ औरंगजेब का यह व्यवहार उसकी अदुरदर्शिता का एक उदहारण है। उसकी इस नीति से मुग़ल सरदारों में भी बैचेनी फैली जबकि राठौड़ों ने दुर्गादास के नेतृत्व में विद्रोह कर दिया।

अजीत सिंह (जसवन्त सिंह का पुत्र) को अंततः 1909 ई. में मुग़ल बादशाह बहादुरशाह ने शासक मान लिया। इस तीस वर्षीय युद्ध (1679-1709 ई. तक) के नायक दुर्गादास की तुलना कर्नल टॉड नए महान योद्धा युसीलीज से की है।

मेवाड़ :-

मेवाड़ के राजा ने औरंगजेब का उत्तराधिकार युद्ध में समर्थन किया था तथा औरंगजेब ने राणा को माँडल, बिदनूर और माँडलगढ़ के परगने भी दिए थे, परन्तु कालान्तर में जजिया आरोपित करने के कारण मेवाड़ से मुगलों के संबंध बिगड़ गए।

इन दो राजपूतों के अतिरिक्त अन्य राजपूत राज्यों से औरंगजेब के संबंध सामान्य रहे।

अध्याय – 7

पृथ्वी राज चौहान

अजमेर के चौहान

वासुदेव चौहान (वासुदेव प्रथम)

शाकभरी का प्राचीन नाम सपादलक्ष था। सपादलक्ष का अर्थ सवा लाख गांवों का समूह। यहीं पर वासुदेव चौहान (वासुदेव प्रथम) ने चौहान वंश की नींव डाली। इसलिए इन्हें चौहानों का आदि पुरुष भी कहते हैं। वासुदेव प्रथम शाकम्भरी/सांभर को अपनी राजधानी बनाया। सांभर झील का निर्माण भी इसी शासक ने करवाया।

पृथ्वीराज प्रथम

चौहान वंश का प्रथम स्वतंत्र शासक पृथ्वीराज प्रथम था। पृथ्वीराज प्रथम ने गुजरात के भडौंच पर अधिकार कर वहां आशापूर्णा देवी के मंदिर का निर्माण करवाया।

अजयराज प्रथम

पृथ्वीराज के बाद अजयराज शासक बना। **अजयराज ने 1113 ई. में पहाडियों के मध्य अजमेरू (अजमेर) नगर की स्थापना की** और इसे नई राजधानी बनाया। अजयराज ने पहाडियों के मध्य अजमेर के दुर्ग का निर्माण करवाया। मेवाड़ के पृथ्वीराज सिसोदिया ने 15 वीं सदी में इसका नाम तारागढ़ दुर्ग कर दिया। इस दुर्ग को पूर्व का जिब्राल्टर कहा जाता है।

अर्णोराज (1133-1155 ई.)

अर्णोराज अजयराज का पुत्र था। अर्णोराज का शासनकाल 1133 -1155 ई. तक रहा।

1. **अर्णोराज ने 1137 ई. में आनासागर झील का निर्माण करवाया।**
2. **आर्णोराज ने पुष्कर में वराह मंदिर का निर्माण अर्णोराज ने करवाया।**

3. अर्णोराज को गुजरात के चालुक्य शासक कुमारपाल ने आबू के निकट युद्ध में पराजित किया था

4. अर्णोराज के पुत्र जगदेव ने अर्णोराज की हत्या कर दी इसलिए जगदेव को चौहानों में पितृहन्ता कहा जाता है।

विग्रहराज चतुर्थ (बीसलदेव) (1153-1164 ई.)

1. बीसलदेव का कार्यकाल चौहान वंश का स्वर्णकाल कहा जाता है।
2. **बीसलदेव को कविबांधव भी कहा जाता है।**
3. बीसलदेव ने हरिकेलि (नाटक) की रचना की। जिसमें शिव-पार्वती व कुमार कार्तिकेय का वर्णन है।
4. बीसलदेव दरबारी कवि **नरपति नाल्ह ने बीसलदेव रासो ग्रन्थ की रचना की।**
5. बीसलदेव कवि **सोमदेव ने ललित विग्रहराज की रचना की।**
6. विग्रहराज चतुर्थ ने बीसलसागर तालाब (वर्तमान बीसलपुर बाँध के स्थान पर) का निर्माण करवाया था।
7. 1153 से 1156 ई. के मध्य विग्रहराज (बीसलदेव) ने अजमेर में एक संस्कृत विद्यालय का निर्माण करवाया जिसे **1200 ई. में कुतुबुद्दीन ऐबक ने संस्कृत विद्यालय को तुडवाकर अढ़ाई दिन का झोपडा बनवाया।**
8. विग्रहराज के बारे में किल होर्न ने लिखा है कि **"वह उन हिन्दू शासको में से एक था जो कालीदास व भवभूति से होड़ कर सकता था"।**

• पृथ्वीराज तृतीय (पृथ्वीराज चौहान)

1177 ई. में पृथ्वीराज चौहान ने 11 वर्ष की अवस्था में राज गद्दी संभाली। उनके पिता का नाम सोमेश्वर तथा माता का नाम कर्पूरी देवी था।

रायपिथौरा – पृथ्वी राज तृतीय चौहान को यह उपाधि प्रदान की गई है।

- पृथ्वीराज चौहान तृतीय का **पुत्र गोविंदराज चौहान** था।
- पृथ्वीराज चौहान तृतीय का **प्रधानमंत्री - कैमास (कदंबदास)**
- **पृथ्वीराज चौहान तृतीय की उपाधियाँ** - राय पिथौरा, दल पंगुल (विश्व विजेता) आदि।
- **पृथ्वीराज चौहान तृतीय के दरबारी कवि** - चंदरबरदाई, वागीश्वर, विद्यापति गौड़, जयानक, जनार्दन, आशाधर आदि।
- पृथ्वीराज चौहान तृतीय अजमेर के चौहान वंश का अंतिम प्रतापी शासक था, जिसने दिल्ली और अजमेर राजधानीयों से शासन किया।
- पृथ्वीराज चौहान तृतीय मात्र 11 वर्ष की अल्पायु में शासक बने थे, इसलिए शासन की बागडोर इसकी माँ कर्पूरी देवी ने संभाली।
- पृथ्वीराज चौहान तृतीय ने भंडानक जाति एवं नागार्जुन के विद्रोह का दमन किया था।
- **महोबा/तुमुल का युद्ध** - पृथ्वीराज चौहान तृतीय ने अपनी दिग्विजय की नीति के तहत 1182 ई० में **'महोबा के युद्ध/तुमुल का युद्ध'** (उत्तर प्रदेश) में परमर्दी देव चन्देल (परमर्दी देव के सेनापति आल्हा व उदल) को पराजित किया।
- पृथ्वीराज चौहान तृतीय कन्नौज के राजा जयचंद गहड़वाल को हराकर उसकी पुत्री संयोगिता को स्वयंवर से उठाकर ले गया, जिससे पृथ्वीराज चौहान तृतीय एवं जयचंद गहड़वाल के बीच दुश्मनी बढ़ गयी। इसी वजह से तराइन के युद्ध में जयचंद गहड़वाल ने पृथ्वीराज चौहान तृतीय की बजाय मोहम्मद गौरी की सहायता की थी।

- 1946 में बंगाल में तेभागा आंदोलन चलाया गया था इसके मुख्य नेता कम्पाराम सिंह एवं भवन सिंह थे। यह आंदोलन भूमिकर की ऊँची दर के विरोध में चलाया गया था।
- हिस्ट्री ऑफ इंडियन म्यूटिनी पुस्तक के लेखक टी.आर. होम्स थे।
- रिबेलयिन 1857 पुस्तक के लेखक पी.सी. जोशी थे।
- फर्स्ट वार ऑफ इंडिपेंडेंस पुस्तक के लेखक विनायक दामोदर सावरकर थे।
- वाराणसी में प्रथम संस्कृत विश्वविद्यालय की स्थापना जोनाथन डंकन ने की थी।
- शिक्षा के प्रसार हेतु 1 लाख रुपए खर्च करने का अधिकार चार्टर अधिनियम 1813 को गवर्नर जनरल को दिया गया।
- लॉर्ड मैकाले अंग्रेजी शिक्षा पद्धति से संबंधित हैं।
- भारत में अंग्रेजी वायसराय शिक्षा लॉर्ड विलियम बैंटिक के शासन काल में आरम्भ की गई थी।

भारत में राष्ट्रीय जागरण या आंदोलन

- भारत में राष्ट्रीय जागरण का काल 19 वीं शताब्दी का मध्य तथा उतरार्द्ध माना जाता है।
- भारत में राष्ट्रीय जागरण के बारे में श्रीमति एनीबेसेंट ने कहा था की इस विराट आंदोलन के पीछे शताब्दियों का इतिहास है।
- भारतीय इतिहास में 18 वीं शताब्दी को 'अंधकार का युग' कहा जाता है।
- राजा राममोहन राय को आधुनिक भारत का पिता तथा नये युग का अग्रदूत कहा जाता है।
- राजा राममोहन राय को पुनर्जागरण का 'सुबह का तारा 'कहा जाता है।
- ब्रह्म समाज की स्थापना राजा राममोहन राय द्वारा 20 अगस्त 1828 ई. को कलकत्ता में की गयी। जिसका उद्देश्य तत्कालीन हिन्दू समाज में व्याप्त बुराइयों जैसे सती प्रथा, बहु विवाह, वेश्यागमन जातिवाद अस्प्रश्यता आदि को समाप्त करना था।
- ब्रह्म समाज आंदोलन का मुख्य सिद्धांत ईश्वर एक है।
- राजा राममोहन राय को भारतीय पुनर्जागरण का मसीहा माना जाता है।
- राजा राममोहन राय की प्रमुख कृतियों में 'प्रीसेप्ट्स ऑफ जीसस' प्रमुख हैं। इन्होंने संवाद कौमुदी (बांग्ला भाषा) तथा मिरातुल अखबार (फारसी भाषा) का भी सम्पादन किया।
- राजा राममोहन राय ने 1814 ई. में आत्मीय सभा की स्थापना की 1815 ई. में इन्होंने वेदान्त कॉलेज के स्थापना की।
- इन्होंने सती प्रथा के विरुद्ध आंदोलन चलाया तथा पाश्चात्य शिक्षा के प्रति अपना समर्थन दिया।
- कालांतर में देवेन्द्रनाथ टैगोर 1818 ई. 1905 ई. ने ब्रह्म समाज को आगे बढाया इनके द्वारा ही केशवचन्द्र सेन को ब्रह्म समाज का आचार्य नियुक्त किया गया।
- लॉर्ड मैकाले ने अंग्रेजी शिक्षा पद्धति का सूत्रपात किया था।
- 1829 ई. में विलियम बैंटिक ने भारत में सती प्रथा पर रोक लगा दी इस कार्य में सहयोग देने में राजा राममोहन राय की प्रमुख भमिका थी।
- **आर्य समाज के संस्थापक स्वामी दयानंद सरस्वती थे।**
- इन्होंने 1875 ई. में बम्बई में आर्य समाज की स्थापना की थी। आर्य समाज की स्थापना का मुख्य उद्देश्य मुसलमानों को पुनःहिन्दू धर्म ग्रहण करने की प्रेरणा देना था
- स्वामी दयानंद सरस्वती को बचपन में मूलशंकर के नाम से जाना जाता था। इनके गुरु स्वामी विरजानन्द थे।
- राममोहन राय को राजा की उपाधि मुगल बादशाह अकबर द्वितीय ने प्रदान की थी।
- राजा राममोहन राय की समाधी ब्रिस्टल (इंग्लैण्ड) में स्थित है।
- इन्होंने अपने उपदेशों में मूर्ति पूजा, बहुदेववाद, अवतारवाद, पशुबलि, श्राद्ध, जंत्र, तंत्र, मंत्र, झूठे कर्मकांड, आदि की आलोचना की तथा पुनः 'वेदों की ओर लोटो का नारा दिया था।

- इनके विचारों का संकलन इनकी कृति 'सत्यार्थ प्रकाश' में मिलता है जिसकी रचना इन्होंने हिंदी में की थी।
- सामाजिक सुधार के क्षेत्र में इन्होंने छुआछुत एवं जन्म के आधार पर जाति प्रथा की आलोचना की।
- भारत का समाज सुधारक मार्टिन लूथर किंग दयानंद सरस्वती को कहा जाता है।
- स्वामी दयानन्द सरस्वती ने सर्वप्रथम स्वराज शब्द का प्रयोग किया और हिंदी को राष्ट्र भाषा माना।
- बंगाली नेता राधाकांत देव ने सती प्रथा का समर्थन किया था।
- स्वामी दयानंद सरस्वती द्वारा चलाये गए शुद्धि आंदोलन के अंतर्गत उन लोगों को पुनः हिन्दू धर्म में आने का मौका मिला जिन्होंने किसी कारणवश कोई और धर्म स्वीकार कर लिया था।
- समाज सुधारक महादेव गोविन्द रानाडे को महाराष्ट्र का सुकरात कहा जाता है।
- स्वामी दयानंद सरस्वती के अनुयायियों में लाला हंसराज ने 1886 ई. में लाहौर में 'दयानंद एंग्लो वैदिक कॉलेज की स्थापना की तथा स्वामी श्रद्धानन्द ने 1901 ई. में हरिहर के निकट कांगड़ी में गुरुकुल की स्थापना की।

भारतीय संस्था थियोसिफिकल सोसायटी

- भारतीय संस्था थियोसिफिकल सोसायटी की स्थापना 1875 ई. में मैडम ब्लावत्सकी एवं कर्नल आल्कोट ने न्यूयॉर्क में की थी।
- जनवरी 1882 ई. में वे भारत आये तथा मद्रास में अड~यार के निकट मुख्यालय स्थापित किया।
- भारत में इस आंदोलन की गतिविधियों को फेलाने का श्रेय श्रीमती एनीबेसेंट को दिया जाता है।
- 1898 ई. में उन्होंने बनारस में सेंट्रल हिन्दू कॉलेज की स्थापना की जो आगे चलकर 1916 ई. में बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय बन गया। आयरलेंड की होमरूल लीग की तरह बेसेंट ने भारत में होमरूल लीग की स्थापना की।
- स्वामी विवेकनद की मुख्य शिष्या सिस्टर निवेदिता थी।
- वास्तव में भारत की एकता इसकी विभिन्नताओं में ही निहित है। हिन्दू धर्म एवं संस्कृति ने सम्पूर्ण देश को एक सूत्र में सदा से बांध रखा है। यह विचार बीसेंट स्मिथ का है।
- 1893 ई. में शिकागो सम्मलेन में स्वामी विवेकान्द ने भाग लिया था।
- रामकृष्ण मिशन की स्थापना स्वामी वेवेकानंद ने 1897 ई. में की थी।
- रामकृष्ण आंदोलन के मुख्य प्रेरक स्वामी रामकृष्ण परमहंस थे रामकृष्ण की शिक्षाओं के प्रचार का श्रेय उनके योग्य शिष्य स्वामी विवेकानंद (नरेन्द्र नाथ दत्त) को दिया जाता है।
- 1893 ई. में 14 वर्ष के बाद योगी राज अरविन्द घोष 1872 -1950 ई. की भारत भूमि पर वापसी हुई। (1893 ई. में उन्होंने एक लेखमाला न्यू लैम्प फॉर ओल्ड ") प्रकाशित किया।
- राजनैतिक सुधारों को लेकर विरोध करने वाले पहले भारतीय सुरेन्द्रनाथ बनर्जी थे।
- प्रार्थना समाज की स्थापना 1867 ई. में केशव चन्द्र सेन के सहयोग से डॉ. आत्माराम पांडुरंग ने बम्बई में की थी।
- भारत सेवक समाज सर्वेन्ट्स ऑफ़ इण्डिया सोसायटी की स्थापना 1905 ई. में गोपाल कृष्ण गोखले ने बम्बई में की थी।
- व्यक्तिगत सत्याग्रह को दिल्ली चलो सत्याग्रह के नाम से जाना जाता है। व्यक्तिगत सत्याग्रह की शुरुआत पवनार से 17 अक्टूबर 1940 से आरम्भ हुई थी।
- सत्यशोधक समाज की स्थापना ज्योतिबा फुले द्वारा की गयी थी।
- सम्पति के निष्कासन के सिद्धांत के प्रतिपादक दादा भाई नौरोजी थे।
- भारतीयों द्वारा अंग्रेजी भाषा में प्रकाशित प्रथम समाचार पत्र हिन्दू पैट्रियॉट था।
- बहिष्कृत भारत पत्रिका का संबंध डॉ. भीमराव अम्बेडकर से था।
- महात्मा गाँधी द्वारा स्थापित हरिजन सेवक संघ के संस्थापक अध्यक्ष घनश्याम दास बिडला थे।
- भारत में यंग बंगाल आंदोलन प्रारम्भ करने का श्रेय हेनरी विवियन डिरोजियो को है एंग्लो -इंडियन

डिरोजियो कलकत्ता में हिन्दू कॉलेज के अध्यापक थे ।

- स्वदेशवाहिनी नामक पत्रिका के सम्पादक के. रामकृष्ण पिल्लै थे ।
- डिरोजियो ने ईस्ट इण्डिया नामक दैनिक पत्र का भी सम्पादन किया
- हेनरी विवियन डिरोजियो को आधुनिक भारत का प्रथम राष्ट्रवादी कवि माना गया है ।
- महात्मा गाँधी ने 1924 ई. में बेलगाँव कांग्रेस अधिवेशन के अध्यक्षता की थी ।
- इंडियन नेशन अखबार का प्रकाशन पटना से होता था।
- साधारण ब्रह्म समाज की स्थापना 1878 ई. में कलकत्ता में शिवनाथ शास्त्री, आनंद मोहन बोस ने की थी ।
- हाली पद्धति बँधुआ मजदूरी से संबंधित है ।
- विधवा पुनर्विवाह को कानूनी रूप से वैध करवाने में ईश्वरचन्द्र विद्यासागर की महत्वपूर्ण भूमिका रही थी ।
- बहुजन समाज के संस्थापक मुकुंद राव पाटिल थे ।
- पंडित रामाबाई सरस्वती द्वारा महिलाओं के उत्थान के लिए आर्य महिला समाज की स्थापना की गयी ।
- भारत में मुस्लिम सुधार आंदोलन का प्रवर्तक सर सैयद अहमद खान को माना जाता है ।
- ब्राह्मणों की सर्वोच्चता को चुनौती देने के लिए आत्म सम्मान आंदोलन वी. रामास्वामी नायकर के द्वारा चलाया गया ।
- गुलामगिरी पुस्तक के लेखक ज्योतिबा फुले थे ।
- धर्म सभा की स्थापना 1829 ई. में कलकत्ता में राधाकांत देव ने की थी ।
- द्वारकानाथ टैगोर द्वारा वर्ष 1838 में स्थापित भारत की प्रथम राजनैतिक संस्था लैंडहोल्डर्स सोसायटी थी ।
- वन्देमातरम समाचार पत्र 1909 ई. में प्रकाशित किया गया इसके संस्थापक लाला हरदयाल, श्यामजी कृष्ण वर्मा थे ।
- महात्मा गाँधी केवल एक बार भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के अध्यक्ष चुने गए थे ।
- भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस का प्रथम अधिवेशन 27 दिसम्बर 1885 को मुम्बई में हुआ था ।
- वहाबी आंदोलन को भारत में सबसे ज्यादा प्रचारित करने का श्रेय सैयद अहमद बरेलवी एवं इस्लाम हाजी मौलवी मोहम्मद को दिया जाता है ।

- ***उदारवादी आंदोलन***
- भारतीय राष्ट्रीयता का जनक उदारवादियों को कहा जाता है ।
- भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस का जनक ए.ओ.ह्युम को कहा जाता है ।
- इंडियन नेशनल यूनियन ने दिसम्बर 1885 में एक कॉन्फ्रेंस को बुलाने का निर्णय लिया था, जिसमें इंडियन नेशनल कांग्रेस की स्थापना की गयी ।
- एनी बेसेंट ने कॉमनवील साप्ताहिक पत्रिका के माध्यम से स्वशासन की माँग की ।
- मोहम्मद अली जिन्ना को हिन्दू-मुस्लिम एकता का दूत सरोजनी नायडू ने कहा था ।
- कांग्रेस की स्थापना के संदर्भ में सेफ्टी वॉल्व का सिद्धांत लाला लाजपत राय के द्वारा दिया गया था ।
- अखिल भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की स्थापना 28 दिसम्बर 1885 को हुई थी इसके प्रथम अध्यक्ष व्योमेशचन्द्र बनर्जी थे ।
- भारत के तेजस्वी पितामह के नाम से दादाभाई नौरोजी जाने जाते हैं ।
- भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के दूसरे अधिवेशन की अध्यक्षता दादाभाई नौरोजी ने की थी ।
- ये उदारवादी वैधानिक तरीके में विश्वाश करते थे ।
- बाल गंगाधर तिलक को अशांति का जनक वेलेंटाइन शिरोल ने कहा था ।
- फेबियन आंदोलन का प्रस्ताव एनी बेसेंट ने दिया था ।
- भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की स्थापना के समय भारत का वायसराय लॉर्ड डफरिन थे ।
- कांग्रेस के उदारवादी नेताओं की कार्य प्रणाली शांतिपूर्ण प्रतिरोध थी ।
- लाला लाजपत राय के अनुसार भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की स्थापना का मुख्य उद्देश्य अंगेजी साम्राज्य को खतरे से बचाना था ।

- कांग्रेस के प्रथम मुस्लिम अध्यक्ष बदरुद्दीन तैयबजी थे।
- सुभाष चन्द्र बोस को सर्वप्रथम नेताजी एडोल्फ हिटलर ने कहा था।
- महात्मा गाँधी को सर्वप्रथम राष्ट्रपिता कहकर संबोधित सुभाषचन्द्र बोस ने किया।
- द स्कोप ऑफ हैप्पीनेस विजयलक्ष्मी पंडित थी ।इंडिया टुडे पुस्तक की लेखक रजनी पाम दत्त थी।

क्रांतिकारी आंदोलन से आजादी तक

- सावरकर बंधुओं ने 1904 में मित्र मेला एवं 'अभिनव भारत' नामक क्रांतिकारी संगठन की स्थापना की।
- महाराष्ट्र में पहली क्रांतिकारी घटना 1897 में प्लेग कमिश्नर रैण्ड की गोली मारकर की गयी हत्या थी।
- वस्तुतः चापेकर बंधुओं ने बालकृष्ण एवं दामोदर चापेकर तिलक के पत्र'केसरी' में छपे लेख से प्रेरित होकर यह कार्य किया था।
- बंगाल में 1902 में अनुशीलन समिति की स्थापना हुई जिसमें 'बारीन्द्र कुमार घोष' एवं 'जतिन नॉथ' की भूमिका महत्वपूर्ण थी।
- बंगाल में 'बारीन्द्र कुमार घोष' एवं 'उपेन्द्रनाथ दत्त' ने 'युगांतर' नामक समाचार पत्र का प्रकाशन किया।
- 1930 में बंगाल में विनय, बादल एवं दिनेश नामक क्रांतिकारियों ने अंग्रेज अधिकारियों की हत्या कर दी। इसी तरह सूर्यसेन)मास्टर दा (ने चटगांव शस्त्रागार पर नियंत्रण स्थापित किया।
- भगत सिंह ने 1925 में 'भारत नौजवान सभा' की स्थापना की जिसने भारतीयों को समाजवादी विचारधारा के माध्यम से क्रान्ति की ओर प्रेरित किया।
- पंजाब में क्रांतिकारी विचारधारा के प्रसार में अजीत सिंह की भूमिका महत्वपूर्ण थी। जब अजीत सिंह को पंजाब से निर्वासित किया गया तो वह फ्रांस पहुंचकर क्रांतिकारी विचारों का प्रचार करने लगे।
- दिल्ली में 1912 में वायसराय लॉर्ड हार्डिंग के काफिले पर बम फेंका गया। इस घटना में रास बिहारी बोस की भूमिका महत्वपूर्ण थी।
- संयुक्त प्रांत में 9 अगस्त 1925 में लखनऊ के पास काकोरी ट्रेन डकैती की गयी और सरकारी खजाने को लूटा गया। इस काकोरी षड्यंत्र मुकदमें के तहत राम प्रसाद बिस्मिल, रोशन सिंह, राजेन्द्र लाहिडी एवं अशफाक उल्ला खां को फांसी दे दी गयी। चन्द्रशेखर आजाद भी इस घटना में, शामिल थे किन्तु वे फरार होने में सफल रहे।
- 1928 में दिल्ली में फिरोजशाह कोटला मैदान में क्रांतिकारियों की बैठक हुई जिसमें भगत सिंह, चन्द्रशेखर आजाद जैसे क्रांतिकारी शामिल थे। इस बैठक में हिंदुस्तान रिपब्लिकन एसोसिएशन)HRA) का नाम बदलकर हिंदुस्तान सोशलिस्ट रिपब्लिकन एसोसिएशन CHSRAJ कर दिया गया।
- रास बिहारी घोष –उदारवादी
- रास बिहारी बोस- क्रांतिकारी
- स्वदेशी आंदोलन में किसानों की भागीदारी नहीं थी।
- ब्रह्म समाज -1828
- आर्य समाज 1875
- रामकृष्ण मिशन -1897

विदेश में प्रसार

- **लंदन** में 1905 में श्याम जी कृष्ण वर्मा ने 'इंडिया होमरुल सोसाइटी' की स्थापना की जिसका लक्ष्य भारत के लिए स्वराज की प्राप्ति करना था। इसकी स्थापना ब्रिटिश समाजवादी नेता 'हीडमैन' के सुझाव पर की गई। हैं। इसके उपाध्यक्ष अब्दुल्ला सुहरावर्दी थे।
- श्याम जी कृष्ण वर्मा ने लंदन में 'इंडिया हाउस' की स्थापना की जो क्रांतिकारियों का प्रमुख केन्द्र बना। यह विदेशों में रह रहे भारतीयों को एकजुट कर क्रांतिकारी विचारधारा के प्रसार में अपनी भूमिका निभाता था। सरकारी दमन के कारण श्याम जी कृष्ण वर्मा को लंदन छोड़ना पड़ा और वे पेरिस चले गए। तत्पश्चात् इंडिया हाउस का कार्यभार वी.डी. सावरकर ने संभाला।
- वी.डी .सावरकर ने 1857 का 'स्वतंत्रता संग्राम' नामक पुस्तक की रचना की और मेजिनी की आत्मकथा का मराठी में अनुवाद किया।
- इसी इंडिया हाउस से जुड़े हुए मदन लाल ढींगरा भारत सचिव के राजनीतिक सलाहकार 'वाइली' की 1909 में गोली मारकर हत्या कर दी।

फ्रांस में श्रीमती भीखा जी कामा ने पेरिस में क्रांतिकारी विचारों का प्रसार किया। इन्होंनें वंदे मातरम नामक पत्र का संपादन किया। इन्हें क्रांतिकारियों की माता कहा जाता है।

अमेरिका-:1913 अमेरिका के पोर्ट लैंड में 'हिंद एसोशिएन' की स्थापना नामक पत्रिका का प्रकाशन गुजराती और उर्दू में किया थी।

- गदर पार्टी की स्थापना अमेरिका के सैन फ्रांसिस्को में हुई । जिसमें सोहन सिंह भावना, लाला हरदयाल भाई परमानंद की भूमिका महत्वपूर्ण थी।
- गदर पार्टी के अध्यक्ष भावना एवं महासचिव लाला हरद्याल थे तथा कोषाध्यक्ष काशीराम थे।
- गदर पार्टी धर्मनिरपेक्ष स्वरूप से युक्त थी।
- गदर पार्टी के सदस्य करतार सिंह सराभा के वीरता एवं बलिदान से भगत सिंह अत्यधिक प्रभावित थे।
- गदर आंदोलन ने कामागाटामारू जहाज विवाद में भारतीयों का समर्थन किया।
- कामागा टामारु जहाज विवाद 1914 में हुआ था ।

अफगानिस्तान-:1915 में राजा महेन्द्र प्रताप एवं बरकतुल्ला तथाओबैदुल्ला सिंधी के प्रयासों से काबुल में भारत की पहली स्वतंत्र एवं अस्थायी सरकार की स्थापना की गयी जिसमें महेन्द्र प्रताप राष्ट्रपति और बरकतुल्ला प्रधानमंत्री बने ।

होमरूल लीग आंदोलन)1916)

- एनी बेसेन्ट और तिलक ने 1916 में होमरुल लीग की स्थापना की। इसका गठन आयरलैंड के होमरूल लीग के आधार पर किया गया ।
- जून-1914 में तिलक जेल से रिहा हुए।
- तिलक ने अप्रैल 1916 में बेलगाँव में होमरूल लीग की स्थापना की जिसकी शाखाएँ महाराष्ट्र)बॉम्बे को छोड़कर(, कर्नाटक, मध्यप्रांत एवं बरार में स्थापित थी।
- ऐनी बेसेंट ने सितम्बर -1916 में मद्रास में होमरूल लीग की स्थापना की जिसकी शाखाएँ तिलक द्वारा स्थापित किए गए क्षेत्रों को छोड़कर पूरे भारत में भी जिनकी संख्या 200 थी और इसके सचिव 'जार्ज अरुण्डेल' थे।
- होमरूल लीग आंदोलन का मुख्य उद्देश्य भारतीय जनमानस को स्वशासन के वास्तविक स्वरूप से परिचित कराना था।
- तिलक और बेसेंट के प्रयासों से 1916 में लखनऊ अधिवेशन में कांग्रेस के नरमदल एवं गरमदल के बीच समझौता हुआ।

1945 -1947 के बीच का भारत:

- वैवेल योजना - जून 1945
- आजाद हिंद फौज एवं लाल किला मुकदमा - नवम्बर 1945
- शाही भारतीय नौसेना विद्रोह -फरवरी 1946
- कैबिनेट मिशन - मार्च 1946
- ब्रिटिश प्रधानमंत्री एटली की घोषणा -20 फरवरी 1947
- माउंटबेटन योजना -3 जून 1947

- **वैवेल योजना - (1945)**वायसराय वैवेल ने 1945 में एक राजनीतिक सुधार की योजना प्रस्तुत की जिसे वेवेल योजना के नाम से जाना जाता है।
- इस योजना के अनुसार वायसराय के कार्यकारिणी का पुर्नगठन किया जाना था। इस उद्देश्य से राजनीतिक नेताओं को जेल से रिहा किया गया और जून 1995 में शिमला में एक सम्मेलन बुलाया गया।
- वैवेल योजना के अंतर्गत निम्नलिखित प्रावधान रखे गए :
  - वायसराय एवं कमांडर-इन चीफ को छोड़कर वायसराय की कार्यकारिणी के सभी सदस्य भारतीय होंगे और परिषद् में हिंदू मुसलमानों की संख्या बराबर रखी जाएगी।
  - वायसराय वीटो पावर के प्रयोग का प्रयास नहीं करेगा।
- इस योजना के संदर्भ में मुस्लिम लीग चाहती थी कि उसे ही भारत मुसलमानों का एक मात्र दल माना जाए वायसराय की कार्यकारिणी में मुस्लिम लीग के बाहर का कोई मुसलमान नहीं होना चाहिए।
- दूसरी तरफ कांग्रेस ने इस सूची के लिए दो मुस्लिम सदस्यों -मौलाना आजाद एवं अब्दुलगफ्फार खाँ को नियुक्त किया जिसका जिन्ना

ने विरोध किया। अतः वायसराय वैवेल ने जिन्ना की आपत्ति देखते हुए सम्मेलन को असफल घोषित कर समाप्त कर दिया।

- कांग्रेस ने जिन्ना के मन को इसलिए स्वीकार नहीं किया क्योंकि ऐसा करने से कांग्रेस एक साम्प्रदायिक दल अर्थात् हिंदू दल के रूप में जाना जाता और भारत के मुसलमानों का एकमात्र दल मुस्लिम लीग को माना जाता। इससे मुस्लिम लीग की भारत विभाजन की माँग और मजबूत हो जाती।

आजाद हिन्द फौज)भारतीय राष्ट्रीय सेना-INA) :- INA की स्थापना 1942 में मोहन सिंह ने की थी।

- जापानी मेजर फूजीवारा ने मोहन सिंह को इसके गठन का सुझाव दिया था।
- मोहन सिंह ब्रिटिश सेना में एक भारतीय सैन्यअधिकारी थे
- 1 सितम्बर 1942 को मोहन सिंह के अधीन मलाया में INA का गठन हुआ।
- INA का दूसरा चरण उस समय आया जब सुभाष चन्द्र बोस 2 जुलाई 1943 में सिंगापुर पंहुचे और वहां से उन्होनें "दिल्ली चलो" का नारा दिया।
- क्रांतिकारी नेता रास बिहारी बोस ने सुभाष चन्द्र बोस को सहयोग दिया।
- अतः सुभाष चन्द्रबोस ने 21 अक्तूबर 1943 आजाद हिंद फौज के नाम से एक अस्थायी सरकार का गठन किया।
- आजाद हिंद फौज का मुख्यालय सिंगापुर के साथ-साथ रंगून,म्यांमार,में भी बनाया गया।
- बोस की सरकार ने Uk और USA के विरुद्ध युद्ध की घोषणा कर दी और गांधी, नेहरू एवं सुभाष नामक सैन्य टुकड़ी का गठन किया
- सुभाष चन्द्र बोस ने महिलाओं के लिए रानी झाँसी रेजिमेंट का गठन किया।

लाल किला मुकदमा (नवम्बर1945):

- आजाद हिंद फौज के बंदी सैनिकों पर ब्रिटिश सरकार द्वारा लाल किले में मुकदमा चलाया गया।
- फ़ौज के शाहनवाज खान, गुरुबख्श सिंह ढिल्लो एवं प्रेम कुमार सहगल को एक ही कठघरे में खड़ा किया गया।
- इसी क्रम में कांग्रेस ने सैनिकों के बचाव हेतु एकआजाद हिंद फौज समिति का गठन किया।
- लाल किले मुकदमे में बचाव पक्ष का नेतृत्व 'भूलाभाई देसाई' कर रहे थे।
- नेहरू ने इस मुकदमे के दौरान 25 वर्ष पश्चात् काली कोट पहनी।
- लाल किले मुकदमे के संदर्भ में कैदियों को सभी राजनीतिक दलो जैसे -कांग्रेस, मुस्लिम लीग, कम्युनिस्ट पार्टी आदि का समर्थन प्राप्त था।
- आजाद हिंद सप्ताह) 11 नवम्बर) को आयोजन किया गया तथा 12 नवम्बर 1945 को आजाद हिंद दिवस मनाया गया।
- आजाद हिंद फौज के कैप्टन अब्दुल रशीद को 7 वर्ष की सजा दिए जाने के विरोध में प्रदर्शन हुआ जिसका नेतृत्व मुस्लिम लीग के छात्रों ने किया। इसमें कांग्रेस एवं कम्युनिस्ट पार्टी के छात्र संगठन भी शामिल हुए।

शाही भारतीय नौसेना विद्रोह 18 फरवरी 1946 को हुआ था।

- हड़ताली नाविकों ने केंद्रीय नौसेना हड़ताल समिति का गठन किया जिसके प्रमुख एम.एस.खान थे।
- विद्रोह का प्रसार बाम्बे, कोलाबा)महाराष्ट्र(, कराँची, कलकत्ता, जबलपुर दिल्ली, अम्बाला, जालंधर आदि स्थानों पर फैला।

कैबिनेट मिशन (मार्च 1946)

- द्वितीय विश्व युद्ध के पश्चात् ब्रिटेन की आर्थिक स्थिति कमजोर होने लगी थी। अत :उपनिवेशों पर पकड़ बनाए रखना सरकार के लिए चुनौतीपूर्ण हुआ ब्रिटेन में संसदीय चुनाव हुए और वहां लेबर 1945 मे पार्टी को बहुमत मिला और ऐटली प्रधानमंत्री बने।
- इसी क्रम में, ब्रिटिश सरकार ने 1946 में तीन सदस्यीय कैबिनेट मिशन भारत भेजने की घोषणा की। इसमें शामिल थे।

नोट – प्रिय उम्मीदवारों, यहाँ हमने केवल SAMPLE ही दिया है, पूरा टॉपिक नही दिया है / यदि आपको हमारे नोट्स के सैंपल अच्छे लगे हों तो कम्पलीट नोट्स खरीदने के लिए नीचे दिए गये हमारे संपर्क नंबर पर कॉल कीजिए या लिंक पर क्लिक करें / दोस्तों, हमें पूर्ण विश्वास है कि ये नोट्स आपकी "राजस्थान 3rd Grade Level – 2 (REET मुख्य परीक्षा)" में पूर्ण संभव मदद करेंगे और आप "INFUSION NOTES" के साथ इस परीक्षा में जरूर सफल होंगे, धन्यवाद /

संपर्क करें – 8233195718, 8504091672, 9694804063, 9887809083,

प्रिय दोस्तों, अब तक हमारे नोट्स में से अन्य परीक्षाओं में आये हुए प्रश्नों के परिणाम –

EXAM (परीक्षा)	DATE	हमारे नोट्स में से आये हुए प्रश्न
RAS PRE. 2021	27 अक्तूबर	74 प्रश्न आये
REET (लेवल -I, 2)	2021	98 (150 में से)
SSC GD 2021	16 नवम्बर	68 (100 में से)
SSC GD 2021	30 नवम्बर	66 (100 में से)
SSC GD 2021	01 दिसम्बर	65 (100 में से)
SSC GD 2021	08 दिसम्बर	67 (100 में से)
राजस्थान S.I. 2021	13 सितम्बर	113 (200 में से)
राजस्थान S.I. 2021	14 सितम्बर	119 (200 में से)

FREE SAMPLE

राजस्थान S.I. 2021	15 सितम्बर	126 (200 में से)
RAJASTHAN PATWARI 2021	23 अक्टूबर (1st शिफ्ट)	79 (150 में से)
RAJASTHAN PATWARI 2021	23 अक्टूबर (2nd शिफ्ट)	103 (150 में से)
RAJASTHAN PATWARI 2021	24 अक्टूबर (1st शिफ्ट)	95 (150 में से)
RAJASTHAN PATWARI 2021	24 अक्टूबर (2nd शिफ्ट)	91 (150 में से)
RAJASTHAN VDO 2021	27 दिसंबर (1st शिफ्ट)	59 (100 में से)
RAJASTHAN VDO 2021	27 दिसंबर (2nd शिफ्ट)	61 (100 में से)
RAJASTHAN VDO 2021	28 दिसंबर (1st शिफ्ट)	56 (100 में से)
RAJASTHAN VDO 2021	28 दिसंबर (2nd शिफ्ट)	57 (100 में से)
U.P. SI 2021	14 नवम्बर 2021 1st शिफ्ट	91 (160 में से)
U.P. SI 2021	21नवम्बर2021 (1st शिफ्ट)	89 (160 में से)

& Many More Exams like REET, UPSC, SSC Etc.

दोस्तों, इनका proof देखने के लिए नीचे दी गयी लिंक पर क्लिक करें या हमारे youtube चैनल पर देखें –

RAS PRE. – https://www.youtube.com/watch?v=p3_i-3qfDy8&t=136s

VDO PRE. – https://www.youtube.com/watch?v=gXdAk856W18&t=202s

Patwari – https://www.youtube.com/watch?v=X6mKGdtXyu4&t=103s

अन्य परीक्षाओं में भी इसी तरह प्रश्न आये हैं Proof देखने के लिए हमारे youtube चैनल (Infusion Notes) पर इसकी वीडियो देखें या हमारे नंबरों पर कॉल करें।

FREE SAMPLE

संपर्क करें- 9887809083, 8233195718, 9694804063, 8504091672

ONLINE ORDER के लिए OFFICIAL WEBSITE	Website- https://bit.ly/3rd-grade-mains-notes
PHONE NUMBER	+918504091672 9887809083 +918233195718 9694804063
TELEGRAM CHANNEL	https://t.me/infusion_notes
FACEBOOK PAGE	https://www.facebook.com/infusion.notes
WHATSAPP करें	https://wa.link/hx3rcz

FREE SAMPLE
INFUSION NOTES
WHEN ONLY THE BEST WILL DO

विश्व भूगोल

अध्याय – I

पृथ्वी - गतियाँ

पृथ्वी सौरमंडल का एक ग्रह है। इसकी दो गतियाँ हैं।

1. घूर्णन (Rotation) अथवा दैनिक गति

2. परिक्रमण (Revolution) अथवा वार्षिक गति।

घूर्णन अथवा दैनिक गति

पृथ्वी सदैव अपने अक्ष पर पश्चिम से पूर्व लट्टू की भांति घूमती रहती है, जिसे 'पृथ्वी का घूर्णन या परिभ्रमण' कहते हैं। इसके कारण दिन व रात होते हैं। अतः इस गति को 'दैनिक गति' भी कहते हैं।

नक्षत्र दिवस (Sideral Day): एक मध्याह्न रेखा के ऊपर किसी निश्चित नक्षत्र के उत्तरोत्तर दो बार गुजरने के बीच की अवधि को नक्षत्र दिवस कहते हैं। यह 23 घंटे व 56 मिनट अवधि की होती हैं।

सौर दिवस (Solar Day): जब सूर्य को गतिहीन मानकर पृथ्वी द्वारा उसके परिक्रमण की गणना दिवसों के रूप में की जाती है तब सौर दिवस ज्ञात होता हैं। इसकी अवधि पूरे 24 घंटे की होती हैं।

परिक्रमण अथवा वार्षिक गति

पृथ्वी अपने अक्ष पर घूमने के साथ-साथ सूर्य के चारों ओर एक अंडाकार मार्ग (Geoid) पर 365 दिन तथा 6 घंटे में एक चक्कर पूरा करती हैं। पृथ्वी के इस अंडाकार मार्ग को 'भू-कक्षा' (Earth Orbit) कहते हैं। पृथ्वी की इस गति को परिक्रमण या वार्षिक गति कहते हैं।

उपसौर (Perihelion) : पृथ्वी जब सूर्य के अत्यधिक पास होती है तो इसे उपसौर कहते हैं। ऐसी स्थिति 3 जनवरी को होती हैं। अपसौर (Aphelion) पृथ्वी जब सूर्य से अधिकतम दूरी पर होती है तो इसे अपसौर कहते हैं। ऐसी स्थिति 4 जुलाई को होती हैं।

दिन रात का छोटा व बड़ा होना

यदि पृथ्वी अपनी धुरी पर झुकी हुई न होती तो सर्वत्र दिन-रात बराबर होते। इसी प्रकार यदि पृथ्वी सूर्य की परिक्रमा न करती तो एक गोलार्द्ध में दिन सदा ही बड़े और रातें छोटी रहती जबकि दूसरे गोलार्द्ध में रातें बड़ी और दिन छोटे होते परंतु विषुवतरेखीय भाग को छोड़कर विश्व के अन्य सभी भागों में विभिन्न ऋतुओं में दिन-रात की लम्बाई में अंतर पाया जाता हैं। विषुवत रेखा. पर सदैव दिन-रात बराबर होते हैं, क्योंकि इसे प्रकाश वृत हमेशा दो बराबर भागों में बाँटता हैं। अतः विषुवत रेखा का आधा भाग प्रत्येक स्थिति में प्रकाश प्राप्त करता हैं।

पृथ्वी पर दिन – रात की स्थिति

21 मार्च से 23 सितम्बर की अवधि में उत्तरी गोलार्द्ध सूर्य का प्रकाश 12 घंटे या अधिक समय तक प्राप्त करता हैं। अतः यहाँ दिन बड़े एवं रातें छोटी होती हैं। जैसे-जैसे उत्तरी ध्रुव की ओर बढ़ते जाते हैं दिन की अवधि भी बढ़ती जाती हैं। उत्तरी ध्रुव पर तो दिन की अवधि छः महीने की होती हैं। 23 सितम्बर से 21 मार्च तक सूर्य का प्रकाश दक्षिणी गोलार्ई में 12 घंटे या अधिक समय तक प्राप्त होता हैं। जैसे-जैसे दक्षिणी ध्रुव की ओर बढ़ते हैं, दिन की अवधि भी बढ़ती हैं। दक्षिणी ध्रुव पर इसी कारण छः महीने तक दिन रहता हैं। इस प्रकार उत्तरी ध्रुव एवं दक्षिणी ध्रुव दोनों पर ही छः महीने तक दिन व छः महीने तक रात रहती हैं।

ऋतु परिवर्तन

चूंकि पृथ्वी न सिर्फ अपने अक्ष पर घूमती है वरन् सूर्य की परिक्रमा भी करती हैं। अतः पृथ्वी की सूर्य से सापेक्ष स्थितियाँ बदलती रहती हैं। पृथ्वी के परिक्रमण में चार मुख्य अवस्थाएँ आती हैं तथा इन अवस्थाओं में ऋतु परिवर्तन होते हैं।

(क) **21 जून को स्थिति** : इस समय सूर्य कर्क रेखा पर लम्बवत् चमकता हैं। इस स्थिति को ग्रीष्म अवनांत (Summer Solstice) कहते हैं। वस्तुतः 21 मार्च के बाद सूर्य उत्तरायण होने लगता है तथा उत्तरी गोलार्द्ध में दिन को अवधि बढ़ने

अध्याय – 6

विश्व - कृषि के प्रकार, प्रमुख औद्योगिक प्रदेश

विश्व में कृषि एवं इसके प्रकार

कृषि -

कृषि (Agriculture) एक प्राथमिक क्रिया है, जिसमें फसलों, फलों, सब्जियों, फूलों को उगाना और पशुधन पालन शामिल हैं। विश्व के लगभग आधे लोग कृषि जुड़ी क्रियाओं में लगे हैं। जिस भूमि पर फसलें उगाई जाती हैं, उसे कृषिगत भूमि (Agriculture Land) कहते हैं।

कृषि के प्रकार

विश्व में कृषि को भौगोलिक दशाओं, उत्पाद की मांग (Demand), श्रम और प्रौद्योगिकी के स्तर पर

सामाजिक आर्थिक व भौतिक कारकों के प्रभाव के आधार पर कई प्रणालियों (Systems) में बाँटा गया है। ये प्रणालियाँ या कृषि के प्रकार निम्नलिखित हैं

स्थानान्तरित कृषि

स्थानान्तरित कृषि (Shifting Agriculture) को झूमिंग कृषि भी कहते हैं। इसमें सबसे पहले वन के किसी खण्ड को साफ करके वृक्षों तथा झाड़ियों को जला दिया जाता है। उसके बाद जब तक भूमि की उर्वरा शक्ति समाप्त नहीं हो जाए, इस पर खेती की जाती है एवं उसके बाद पुनः यह प्रक्रिया दूसरी भूमि पर की जाती है, इसलिए इसे काटना और जलाना (Slash and Burn) अथवा बुश फेलो कृषि भी कहा जाता है।

नाम	क्षेत्र
रे (Ray)	वियतनाम तथा लाओस
टावी (Tavy)	मेडागास्कर
मसोले (Masole)	काँगो (जायरे नदी घाटी क्षेत्र)
that (Fange)	भूमध्यरेखीय अफ्रीकी देश
लोगन (Logan)	पश्चिमी अफ्रीका
कोनूल अथवा कोमिले((Konul or Komile)	मैक्सिको
मिल्पा (Milpa)	मैक्सिको एवं मध्य अमेरिकी देश
कोनूको (Conuco)	वेनेजुएला
रोका (Roca)	ब्राजील
चेतेमिनी (Chatemini)	युगाण्डा, जाम्बिया तथा जिम्बाब्वे
कैंगिन (Kaingin)	फिलीपीन्स
तुंग्या (Tungya)	म्यांमार (बर्मा)
चेन्ना (Channa))	श्रीलंका
लदांग (Ledang)	जावा तथा मलेशिया
तमराई (Tamrai)	थाइलैण्ड
हुमा (Hummah)	जावा तथा इण्डोनेशिया

जलवायु विषम होने के कारण पशुओं कायहाँ अभाव है, जिस कारण यहाँ पशुपालन का

विकास नहीं हो पाया है।

निर्वाहक कृषि

जब कृषि केवल खेती करने वाले परिवार के निर्वाह मात्र करने हेतु की जाती है तो उसे निर्वाहक कृषि (Subsistence Agriculture) कहा जाता है।

विस्तृत कृषि

विस्तृत आकार वाले खेतों के जोतों पर यान्त्रिक विधियों से की जाने वाली कृषि को ही विस्तृत कृषि assets (Extensive Agriculture) कहते हैं।

मिश्रित कृषि

इस कृषि में फसलें उगाने तथा पशुओं को पालने का कार्य एक साथ किया जाता है। यह मिश्रित बुआई से भिन्न है। मिश्रित बुआई में एक ही खेत में एक ही समय पर कई फसलें बोई जाती हैं, जबकि मिश्रित कृषि में फसलें उगाने के साथ-साथ पशुपालन का कार्य भी किया जाता है।

मिश्रित कृषि यूरोप में आयरलैण्ड से रूस तक, उत्तरी अमेरिका के पूर्वी भाग, अर्जेण्टीना के पम्पास, दक्षिणी-पूर्वी ऑस्ट्रेलिया, दक्षिणी अफ्रीका और न्यूजीलैण्ड में की जाती है।

भूमध्यसागरीय कृषि

भूमध्यसागरीय जलवायु वाले प्रदेशों में की जाने वाली कृषि को भूमध्यसागरीय कृषि

(Mediterranean Agriculture) का नाम दिया गया है। यहाँ की जलवायु की विशेषता है कि यहाँ

सर्दियों में वर्षा होती है और ग्रीष्म ऋतु में सूखा रहता है, अतः यहाँ शीत एवं ग्रीष्म में भिन्न-भिन्न

फसलों की खेती की जाती है।

बागानी कृषि

बागानों तथा फार्मों पर की जाने वाली खेती को ही बागानी कृषि (Plantation) कहते हैं। ऐसी कृषि में विशिष्ट प्रकार की फसलें पैदा की जाती जैसे—केला, रबड़, चाय, कॉफी तथा कोको आदि।

क्षेत्र के दृष्टिकोण से इस प्रकार की कृषि के चार क्षेत्र हैं

1. उष्णकटिबंधीय क्षेत्र

2. लैटिन अमेरिका

3. दक्षिण और दक्षिणी-पूर्वी एशिया

4. मध्य अफ्रीका के गिनी तट।

गहन कृषि

कम क्षेत्र में यान्त्रिक विधियों द्वारा अधिक मात्रा में उपजाई जाने वाली फसलों को गहन कृषि (Intensive Agriculture) के प्रकार में शामिल किया जाता है।

इसके अन्तर्गत निश्चित समयावधि में अधिकाधिक फसलों का उत्पादन किया जाता है।

व्यापारिक पादप रोपण कृषि

यह नवीन प्रणाली है, जिसका इतिहास लगभग 100 वर्ष पुराना है। इस व्यवस्था में अनेक उपजें

(चाय, कहवा, नारियल, गन्ना, केला, मसाले, कोको, रबर आदि) बागानों में व्यापारिक दृष्टि से उत्पन्न की जाती हैं। इस कृषि का विकास एवं प्रोत्साहन समशीतोष्ण कटिबंधीय देशों को निर्यात करने के

उद्देश्य से अनेक उष्णकटिबंधीय देशों में उपनिवेशवाद (Colonialism) के दौरान किया गया

था। चाय, कपास एवं तम्बाकू जैसी कुछ फसलें उपोष्ण कटिबंधीय देशों में भी उपजाई जाती हैं।

विश्व में कृषि के विशेष प्रकार

विश्व की वर्तमान कृषि व्यवस्था में बड़े पैमाने की विभिन्न कृषि पद्धतियों के अतिरिक्त कुछ विशेष प्रकार की कृषि प्रचलित हैं, जो इस प्रकार हैं विटीकल्चर (Viticulture) अंगूरों की व्यापारिक स्तर पर उत्पादन।

पीसीकल्चर (Pisciculture) अथवा जल कृषि (Aquaculture) व्यापरिक स्तर पर की जाने वाली मछली पालन की कृषि।

सेरीकल्चर (Sericulture) रेशम उत्पादन की क्रिया जिसमें शहतूत आदि की कृषि भी सम्मिलित है।

हॉर्टीकल्चर (Horticulture) व्यापारिक स्तर पर किया जाने वाला विभिन्न प्रकार के फलों का उत्पादन।

आरबरीकल्चर (Arboriculture) विशेष प्रकार के वृक्षों तथा झाड़ियों की कृषि जिसमें उनका संरक्षण तथा सम्वर्द्धन भी शामिल है।

,विनियम आदि जिन्हें न्यायिक पुनर्विलोकन से बचाने के लिए इसमें सम्मीलित किया गया था।

- **दसवी अनुसूची (art 102(2) एवं 191(2))-** दल-बदल (defection) के आधार पर संसद और विधानसभा के सदस्यों की निरर्हता से सम्बन्धित उपबंध।
- **ग्यारहवीं अनुसूची (art 243(ब))-**पंचायतो की शक्तियां व उत्तरदायित्व निर्धारित किए गए हैं।
- **बारहवी अनुसूची (art243(ब))-** नगरपालिका ओं की शक्तियां व उत्तरदायित्व निर्धारित किए गए हैं।
- आठवीं अनुसूची में सिंधी भाषा 21 वे संविधान संशोधन अधिनियम ,1967 द्वारा जोड़ी गई थी।
- भारतीय संविधान में 9 वीं अनुसूची प्रथम संविधान संशोधन(वर्ष 1951) के माध्यम से जोड़ा गया।
- दसवीं अनुसूची को 52 वें संविधान संशोधन अधिनियम ,1985 द्वारा संविधान में जोड़ा गया था तथा 91 वें संविधान संशोधन अधिनियम ,2003 द्वारा इसमें संशोधन किया गया। इसे दल-बदल विरोधी कानून(anti-defection law)
- अंग्रेजी जो कि भारत में बोली जाने वाली एक प्रमुख भाषा है ,परन्तु इसे संविधान की 8 वीं अनुसूची में शामिल नहीं किया गया।

अध्याय – 3

मूल अधिकार

मौलिक अधिकार (भाग -3)(art 12-35)

- समानता का अधिकार (Art- 14-18)
- स्वतंत्रता का अधिकार (Art 19-22)
- शोषण के विरुद्ध अधिकार (Art 23-24)
- धार्मिक स्वतंत्रता का अधिकार (Art 25-28)
- सांस्कृतिक व शिक्षा का अधिकार (Art 29-30)
- संवैधानिक उपचारों का अधिकार (Art 32)
- अनुच्छेद 20 व 21 को छोड़कर बाकी अधिकार आपात काल में स्थापित हो जाते हैं।
- मौलिक अधिकारों की अवधारणा को U.S.A(अमेरिका) से अपनाया गया है।

समता का अधिकार :- (अनु. 14-18)

- **विधि के समक्ष समता (art -14)-** विधी के समक्ष समता की अवधारणा ब्रिटेन से प्रभावित हैं। इसका अर्थ है कि सभी व्यक्तियों के लिए एकसमान कानून होगा तथा उन पर एकसमान लागु होगा।

INFUSION NOTES
WHEN ONLY THE BEST WILL DO

- **धर्म ,नस्ल ,जाति ,लिंग या जन्म-स्थान के आधार पर भेदभाव का प्रतिषेद(art -15)-** राज्य किसी नागरिक के साथ केवल धर्म, मूल, वेश, जाति, लिंग या जन्म स्थान को लेकर विभेद नही करेगा। यह व्यवस्था राज्य और व्यक्ति दोनों पर समान रूप से लागू होती हैं।

- **लोक नियोजन के सम्बन्ध में अवसर की समता (अनु०- 16)-** राज्य के अधीन किसी पद पर नियोजन या नियुक्ति से संबंधित विषयों में सभी नागरिकों के लिए अवसर की समानता होगी।

- **अस्पृश्यता का उन्मूलन (अनु.-17)-** संविधान के अनु० 17 में यह प्रावधान है कि अस्पृश्यता को समाप्त किया जाता है और किसी भी रूप में अस्पृश्यता को बढ़ावा देना दण्डनीय अपराध होगा।

- **उपाधियों का अंत (अनु. 18)-** राज्य सेवा या विधा संबंधी सम्मान के सिवाय अन्य कोई भी उपाधि राज्य द्वारा प्रदान नहीं की जायेगी ।
- भारत का कोई नागरिक किसी अन्य देश से बिना राष्ट्रपति की आज्ञा के कोई उपाधि स्वीकार नहीं कर सकता है ।

स्वतन्त्रता का अधिकार(अनु० 19-22) :-

- **वाक् एवं अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता(अनु. 19):-** मूल संविधान में सात तरह की स्वतंत्रता का उल्लेख था । अब सिर्फ छह है ।

1.	art 19 (a)	बोलने की स्वतंत्रता /प्रेस की स्वतंत्रता
2.	art 19 (b)	शांतिपूर्वक बिना हथियारों के एकत्रित होने और सभा करने की स्वतंत्रता
3.	art 19 (c)	संघ बनाने की स्वतंत्रता
4.	art 19 (d)	देश के किसी भी क्षेत्र में आवागमन की स्वतंत्रता
5.	art 19 (e)	देश के किसी भी क्षेत्र में निवास करने और बसने की स्वतंत्रता
6.	art 19 (g)	कोई भी व्यापार एवं जीविका चलाने की स्वतंत्रता

- art 19 (f) सम्पति का अधिकार ,44 वाँ संविधान संशोधन 1978 के द्वारा हटा दिया गया।

अपराधो के सम्बन्ध में अथवा दोष सिद्धि के सम्बन्ध में संरक्षण(अनु. -20):-

इसमें प्रावधान हैं कि –

- किसी व्यक्ति को तब तक किसी अपराध के सम्बन्ध में दोषी नही ठहराया जायेगा जब तक उसने किसी प्रचलित विधि का उल्लंघन नही किया हो ।
- किसी व्यक्ति को वही दण्ड दिया जायेगा जो अपराध करते समय लागू। अर्थात् बाद में बनाई गई विधी के अनुसार व्यक्ति को दण्डित नही किया जायेगा । लेकिन ये केवल आपराधिक मामलों पर ही लागू होता है। सिविल मामलो के संबंध में अपराध के बाद बनाई गई विधि के अनुसार व्यक्ति को दण्डित किया जा सकता।
- (कर चोरी, दिवालिया होना या किसी प्रकार के दिवानी से सम्बंधित प्रावधान)
- किसी व्यक्ति को एक अपराध के लिए एक बार ही दण्डित किया जायेगा।
- किसी अपराध के लिए किसी व्यक्ति की स्वयं के विरुद्ध साक्षी होने के बाध्य नही किया जाएगा।

प्राण एवं दैहिक स्वतंत्रता का सरंक्षण (अनु० 21) :-

- इसमे प्रावधान है कि किसी व्यक्ति को उसके प्राण एवं देहिक स्वतंत्रता से विधी के द्वारा स्थापित प्रक्रिया के अनुसार ही वंचित किया जाएगा।
- सर्वोच्च न्यायालय में अनु. 21 को समय-समय पर अधिक से अधिक प्रसारित किया। वर्तमान समय में इसमें निम्नलिखित अधिकार शामिल हो चुके है –

1. निजता का अधिकार।
2. स्वच्छ पर्यावरण का अधिकार।
3. मानवीय प्रतिष्ठा के साथ जीने का अधिकार।
4. दुर्घटना के समय प्राथमिक उपचार का अधिकार ।
5. निः शुल्क कानूनी सहायता का अधिकार ।
6. हथकड़ी लगाने के विरुद्ध अधिकार ।
7. सूचना का अधिकार ।
8. कारावास में अकेले बंद करने के विरुद्ध अधिकार ।
9. देरी से फांसी के विरुद्ध अधिकार ।
10. फ़ोन टेपिंग के विरुद्ध अधिकार ।
11. विदेश यात्रा की अधिकार
12. नींद का अधिकार

शिक्षा का अधिकार :- (अनु.21-क)

86 वें संविधान संशोधन अधि. - 2002 के माध्यम से इसे संविधान में जोड़ा गया। इसमें प्रावधान है कि राज्य 6-14 आयु वर्ग के बालक को निःशुल्क एवं अनिवार्य प्रारंभिक शिक्षा उपलब्ध करवाएगा।

इसके संबंध राज्य विधि बनाकर शिक्षा की व्यवस्था करेगा । इसी प्रावधान के तहत निःशुल्क एवं अनिवार्य प्रारंभिक शिक्षा का अधिकार अधिनियम 2009 पारित किया गया । जिसे । अप्रैल 2010 को लागू किया गया।

अनु० 22 :- निरोध एवं गिरफ्तारी से संरक्षण :-
इसके तहत व्यक्ति को निम्नलिखित अधिकार प्राप्त होते हैं –

- गिरफ्तार किए गए व्यक्ति को उसकी गिरफ्तारी का कारण बताना होगा ।
- गिरफ्तार किये गए व्यक्ति को यह अधिकार है कि वह अपनी पसंद के वकील से परामर्श ले सकता है।
- गिरफ्तार किए गए व्यक्ति को 24 घंटे के भीतर न्यायिक अधिकारी (मजिस्ट्रेट) के सामने प्रस्तुत करना होगा। इन 24 घंटो में यात्रा का समय शामिल नही होगा। लेकिन यदि किसी व्यक्ति की गिरफ्तारी निवारक निरोध के तहत की जाती है तो उपर्युक्त अधिकार प्राप्त नहीं है। निवारक निरोध के तहत गिरफ्तार व्यक्ति तीन माह तक मजिस्ट्रेट सामने प्रस्तुत की आवश्यकता नहीं है।
- अनु.22 से सम्बंधित अधिकार किसी विदेशी को भी प्राप्त नही होते ।

मानव व्यापार एवं बलात् श्रम पर प्रतिबन्ध (अनु. 23)

- मानव दुर्व्यव्यापार से आशय है। महिला पुरुष बच्चो की वस्तुओं के समान खरीद अथवा बिक्री करना।
- इसमें देह व्यापार के लिए क्रय विक्रय अथवा शरीर के अंगो के क्रय विक्रय आदि को भी शामिल किया जाता है ।
- इसी प्रकार किसी व्यक्ति से बलात् श्रम नही करवाया जा सकता । बलात् श्रम से आशय है, व्यक्ति की इच्छा के विरुद्ध उससे कार्य करवाना।

बाल श्रम का प्रतिषेध (अनु. 24)

- 14 से 18 वर्ष की आयु के किसी बालक को कारखानों या अन्य किसी जोखिम वाले कार्य में नियोजित नहीं किया जा सकता।

- **धर्म की स्वतंत्रता का अधिकार (अनु. 25-28):-**
- अंत: करण की और धर्म को मानने ,आचरण और प्रचार करने की स्वतंत्रता (अनु. 25)
- अनु. 25 में यह भी प्रावधान है कि कृपाण धारण करना और लेकर चलना सिख धर्म का मुख्य अंग माना जाएगा।

धार्मिक कार्यो के प्रबंध की स्वतंत्रता(अनु० 26) :-

व्यक्ति को अपने धर्म के लिए संस्थाओ की स्थापना व पोषण करने, विधि –सम्मत सम्पति के अर्जन, स्वामित्व व प्रशासन का अधिकार है ।

- अनु. 25 जहाँ व्यक्तिगत अधिकार से सम्बंधित हैं । जबकि अनु. 26 समूह से सम्बंधित है ।

अनु. 27 – धर्म से सम्बंधित अथवा किसी धर्म विशेष की अभिवृद्धि के सम्बन्ध में करो के संदाय अथवा करो के देने की स्वतंत्रता

- इसमें प्रावधान है कि किसी भी व्यक्ति को किसी धर्म विशेष की अभिवृद्धि के उद्देश्य से कर देने के लिए बाध्य नही किया जा सकता ।
- सर्वोच्च न्यायालय ने इसके सम्बन्ध में निर्णय दिया है कि राज्य कर की राशि को किसी एक धर्म या सम्प्रदाय की अभिवृद्धि के लिए खर्च नही कर सकता ।

अनु. 28 :- शिक्षण संस्थाओ में धार्मिक शिक्षा या धार्मिक उपासना में उपस्थित होने के संबंध में स्वतंत्रता:

निम्नलिखित प्रकार के शैक्षणिक संस्थाओं में धार्मिक शिक्षा के सम्बन्ध में प्रावधान है कि-
अनु. 28 के अनुसार राजकीय निधि से संचालित किसी भी शिक्षण संस्था में किसी प्रकार की धार्मिक शिक्षा प्रदान नहीं की जाएगी। इसके साथ ही राज्य द्वारा मान्यता प्राप्त या आर्थिक सहायता प्राप्त शिक्षण संस्था में किसी व्यक्ति को किसी धर्म विशेष की शिक्षा ग्रहण करने के लिए बाध्य नही किया जा सकेगा ।

(5) संस्कृति और शिक्षा सम्बन्धी अधिकार (अनु. 29 व 30):-

अनु. 29 में यह प्रावधान कि भारत के किसी क्षेत्र के किसी निवासी नागरिकों अथवा इसके किसी भाग की जिसकी अपनी विशेष भाषा, लिपि या संस्कृति है। तो उसे बनाए रखने का अधिकार होगा।

225	उच्च न्यायालयों का क्षेत्राधिकार
231	दो या अधिक राज्यों के लिए एक साझे उच्च न्यायालय की स्थापना

अध्याय – 7

स्थानीय शासन

- **ग्रामीण एवं नगरीय**

पंचायती राज

- स्थानीय शासन 'महात्मा गाँधी' की संकल्पना राम राज्य या ग्राम स्वराज्य का परिष्कृत रूप है। गाँधीजी की इस संकल्पना को फलीभूत करने के लिए भारतीय संविधान के अनुच्छेद 40 में राज्य सरकार को निर्देश दिए गए थे, जो 1993 में 73वें संविधान संशोधन के परिणामस्वरूप सम्भव हुआ।
- 73वें एवं 74वें संविधान संशोधन 1993 के तहत स्थानीय शासन भारतीय परिसंघीय व्यवस्था में तीसरे स्तर की सरकार को सामने ला खड़ा किया।
- 'पंचायती राज' और 'नगरपालिका प्रणाली' को संवैधानिक अस्तित्व प्राप्त करने में एक लम्बा संघर्ष करना पड़ा।
- वर्ष 1956 में गठित बलवन्त राय मेहता समिति ने सर्वप्रथम पंचायती राज को स्थापित करने की सिफारिश की जिसे स्वीकार कर लिया गया साथ ही सभी राज्यों को इसे क्रियान्वित करने के लिए कहा गया।
- सर्वप्रथम राजस्थान के नागौर जिले में 2 अक्टूबर 1959 को पण्डित जवाहर लाल नेहरू ने पंचायती राज की नींव रखी और उसी दिन इसे सम्पूर्ण राज्य (राजस्थान) में लागू कर दिया गया।
- किन्तु वाँछित सफलता प्राप्ति में कमी ने इस पर गम्भीरता से विचार करने के लिए मजबूर किया। अनेक समितियों का गठन किया गया, जिन्होंने अपनी सिफारिशों से पंचायती राज को मजबूती प्रदान की।

पंचायती राज व्यवस्था समितियाँ		
1.	बलवंत राय मेहता समिति	1957

2.	अशोक मेहता समिति	1977
3.	जी.वी.के. राव समिति	1985
4.	एल. एम. सिंघवी समिति	1986
5.	संथानम समिति	1962
6.	सादिक अली समिति	1964

पंचायती राज संस्थाओं को संवैधानिक दर्जा

- वर्ष, 1989 में तत्कालीन प्रधानमंत्री श्री राजीव गाँधी ने पंचायतों के सुधार व सशक्तिकरण में विशेष रुचि ली तथा एल. एम. सिंघवी समिति और थुमन समिति की सिफारिशों के आधार पर लोकसभा में 64वाँ संविधान संशोधन विधेयक प्रस्तुत किया। जिसे लोकसभा द्वारा पारित कर दिया गया लेकिन राज्यसभा द्वारा अस्वीकार कर दिए जाने के कारण विधेयक समाप्त हो गया।
- तत्पश्चात्, वर्ष 1992 में पंचायत सम्बन्धी प्रावधान के लिए प्रधानमंत्री पी. वी. नरसिम्हा राव द्वारा 73वाँ संविधान संशोधन विधेयक संसद में लाया गया, जिसे लोकसभा एवं राज्यसभा ने क्रमशः 22 एवं 23 दिसम्बर, 1992 को पारित कर दिया।
- 17 राज्यों की विधानसभाओं द्वारा अनुमोदित किए जाने के बाद 20 अप्रैल, 1993 को राष्ट्रपति ने इस विधेयक पर अपनी सहमति प्रदान कर दी। 24 अप्रैल, 1993 से 73वाँ संविधान संशोधन अधिनियम पूरे देश में लागू हो गया।
- 73वें संविधान संशोधन अधिनियम 1992 के पारित होने से देश के संघीय लोकतांत्रिक ढाँचे में एक नए युग का सूत्रपात हुआ और पंचायती राज संस्थाओं को सवैंधानिक दर्जा प्राप्त हो गया।
- इस संविधान संशोधन द्वारा संविधान में भाग 9 को पुनः स्थापित कर 16 नए अनुच्छेद (अनुच्छेद-243 से अनुच्छेद 243 (O) तक) और 11वीं अनुसूची जोड़ी गई। इसके द्वारा पंचायतों के गठन, संरचना, निर्वाचन, सदस्यों की अर्हताएँ, पंचायतों की शक्तियाँ, प्राधिकार और उत्तरदायित्व आदि के लिए प्रावधान किए गए हैं।
- ग्यारहवीं अनुसूची में कुल 29 विषयों का उल्लेख है, जिन पर पंचायतों को विधि बनाने की शक्ति प्रदान की गई है।
- यह संशोधन अधिनियम 24 अप्रैल, 1993 को प्रवर्तित हुआ। इसलिए प्रत्येक वर्ष 24 अप्रैल को पंचायत दिवस (Panchayat Day) के रूप में मनाया जाता है।
- इस संशोधन अधिनियम का अभिपालन करने वाला प्रथम राज्य मध्य प्रदेश है। मध्य प्रदेश में सन् 1994 में पंचायत चुनाव आयोजित किए गए थे।
- इस प्रकार, भारत में पंचायती राज शक्तियों के विकेन्द्रीकरण, प्रशासन में लोगों की भागीदारी तथा सामुदायिक विकास का प्रतिनिधित्व करता है।

अनुच्छेद 40 के तहत यह प्रावधान किया गया है कि राज्य ग्राम पंचायतों के गठन के लिए कदम उठाएगा और उन्हें स्वायत्त शासन की इकाई के रूप में कार्य करने के योग्य बनाने के लिए आवश्यक शक्तियाँ और अधिकार प्रदान करेगा। इस अधिनियम के प्रमुख प्रावधान निम्नलिखित हैं।

पंचायतों का गठन और संरचना

- अनुच्छेद 243 (b) भारत में त्रिस्तरीय पंचायती राज व्यवस्था का प्रावधन करता है। प्रत्येक राज्य में ग्राम स्तर पर ग्राम पंचायत, मध्यवर्ती स्तर पर क्षेत्र पंचायत और जिलास्तर पर जिला पंचायत के गठन का प्रावधान है, किन्तु उस राज्य में जिसकी जनसंख्या 20 लाख से कम है, वहाँ मध्यवर्ती स्तर पर पंचायतों का गठन करना आवश्यक नहीं है।
- भारत में पश्चिम बंगाल ऐसा राज्य है, जहाँ चार स्तरीय पंचायत व्यवस्था अपनाई गई है। वहाँ पंचायतों के चार स्तर यथा ग्राम पंचायत, अंचल पंचायत, आंचलिक परिषद् और जिला परिषद् हैं।
- अनुच्छेद 243 (c) में पंचायतों की संरचना के बारे में प्रावधान किया गया है। इसके तहत राज्य विधानमण्डल को विधि द्वारा पंचायतों की संरचना

- **74 वां संविधान संशोधन अधिनियम 1992**

- 1992 का 74वां संशोधन अधिनियम ।
- 74वां संशोधन अधिनियम ने भारत के संविधान में नया भाग 9 क शामिल किया । इसे 'नगरपालिकाएं' नाम दिया गया और अनुच्छेद 243त से 243 यछ के उपबंध शामिल किए गए। इस अधिनियम के कारण संविधान में एक नई 12वीं सूची को भी जोड़ा । इस सूची में नगरपालिकाओं की 18 कार्यकारी विषय वस्तुओं का उल्लेख है। यह अनुच्छेद 243- डब्ल्यू से संबंधित है ।इस अधिनियम ने नगरपालिकाओं को संवैधानिक दर्जा प्रदान किया। इससे इसे संविधान के न्यायोचित भाग के क्षेत्राधिकार में लाया गया। दूसरे शब्दों में, राज्य सरकार अधिनियम के प्रावधानानुसार नई नगरपालिका पद्धति को अपनाने के लिए संवैधानिक रूप से बाध्य है
- इस अधिनियम का उद्देश्य शहरी शासन को पुनर्जीवित करना एवं शक्तिशाली बनाना है, जिससे कि वे स्थानीय शासन की इकाई के रूप में प्रभावशाली ढंग से कार्य करें ।

74 वां संशोधन अधिनियम की प्रमुख विशेषताएं

तीन प्रकार की नगरपालिकाएं

यह अधिनियम प्रत्येक राज्य में निम्न तीन तरह की नगरपालिकाओं की संरचना का उपबंध करता है:

1. नगर पंचायत)किसी भी नाम से (परिवर्तित क्षेत्र के लिए, जैसे वह क्षेत्र जो ग्रामीण क्षेत्र से शहरी क्षेत्र में परिवर्तित हो रहा हो ।

2. नगरपालिका परिषद छोटे शहरी क्षेत्रों के लिए ।

3. बड़े शहरी क्षेत्रों के लिए नगरपालिका निगम

नगरपालिका की संरचना:

नगरपालिका के सभी सदस्य सीधे नगरपालिका क्षेत्र के लोगों द्वारा चुने जाएंगे। इस उद्देश्य के लिए प्रत्येक नगरपालिकाओं को निर्वाचन क्षेत्रों) वार्ड (में बांटा जाएगा। राज्य विधानमंडल नगरपालिका के अध्यक्ष के निर्वाचन का तरीका प्रदान कर सकता है। यह नगरपालिका में निम्न व्यक्तियों के प्रतिनिधित्व की व्यवस्था करता है:

1. वह व्यक्ति जिसे नगरपालिका के प्रशासन का विशेष ज्ञान अथवा अनुभव हो लेकिन उसे नगरपालिका की सभा में वोट डालने का अधिकार नहीं होगा।

2. निर्वाचन क्षेत्रों का प्रतिनिधित्व करने वाले लोकसभा या राज्य विधानसभा के सदस्य, जिनमें नगरपालिका का पूर्ण या अंशतः क्षेत्र आता हो ।

3. राज्यसभा और राज्य विधानपरिषद के सदस्य जो नगरपालिका क्षेत्र में मतदाता के रूप पंजीकृत हों ।

4. समिति के अध्यक्ष) वार्ड समितियों के अतिरिक्त (।

वार्ड समितियां:

- तीन लाख या अधिक जनसंख्या वाली नगरपालिका के क्षेत्र के तहत एक या अधिक वार्डों को मिलाकर वार्ड समिति होगी। वार्ड समिति की संरचना, क्षेत्र और वार्ड समिति में पदों को भरने के संबंध में राज्य विधानमंडल उपबंध बना सकता है । यह वार्ड समिति के साथ-साथ समिति की बनावट के लिए भी उपबंध बना सकता है ।

पदों का आरक्षण:

- यह अधिनियम अनुसूचित जाति एवं अनुसूचित जनजाति को उनकी जनसंख्या और कुल नगरपालिका क्षेत्र की जनसंख्या के अनुपात में प्रत्येक नगरपालिका में आरक्षण प्रदान करता है । इसके अलावा यह महिलाओं को कुल सीटों के एक-तिहाई) इसमें अनुसूचित जाति व जनजाति महिलाओं से संबंधित आरक्षित सीटें भी हैं) (इसमें कम नहीं (सीटों पर आरक्षण प्रदान करता है ।
- राज्य विधानमण्डल अनुसूचित जाति, अनुसूचित जनजाति और महिलाओं हेतु

नोट – प्रिय उम्मीदवारों, यहाँ हमने केवल SAMPLE ही दिया है, पूरा टॉपिक नही दिया है / यदि आपको हमारे नोट्स के सैंपल अच्छे लगे हों तो कम्पलीट नोट्स खरीदने के लिए नीचे दिए गये हमारे संपर्क नंबर पर कॉल कीजिए या लिंक पर क्लिक करें / दोस्तों, हमें पूर्ण विश्वास है कि ये नोट्स आपकी "राजस्थान 3rd Grade Level – 2 (REET मुख्य परीक्षा)" में पूर्ण संभव मदद करेंगे और आप "INFUSION NOTES" के साथ इस परीक्षा में जरूर सफल होंगे, धन्यवाद /

संपर्क करें – 8233195718, 8504091672, 9694804063, 9887809083,

प्रिय दोस्तों, अब तक हमारे नोट्स में से अन्य परीक्षाओं में आये हुए प्रश्नों के परिणाम –

EXAM (परीक्षा)	DATE	हमारे नोट्स में से आये हुए प्रश्न
RAS PRE. 2021	27 अक्तूबर	74 प्रश्न आये
REET (लेवल -I, 2)	2021	98 (150 में से)
SSC GD 2021	16 नवम्बर	68 (100 में से)
SSC GD 2021	30 नवम्बर	66 (100 में से)
SSC GD 2021	01 दिसम्बर	65 (100 में से)
SSC GD 2021	08 दिसम्बर	67 (100 में से)
राजस्थान S.I. 2021	13 सितम्बर	113 (200 में से)
राजस्थान S.I. 2021	14 सितम्बर	119 (200 में से)

FREE SAMPLE

राजस्थान S.I. 2021	15 सितम्बर	126 (200 में से)
RAJASTHAN PATWARI 2021	23 अक्टूबर (1st शिफ्ट)	79 (150 में से)
RAJASTHAN PATWARI 2021	23 अक्टूबर (2nd शिफ्ट)	103 (150 में से)
RAJASTHAN PATWARI 2021	24 अक्टूबर (1st शिफ्ट)	95 (150 में से)
RAJASTHAN PATWARI 2021	24 अक्टूबर (2nd शिफ्ट)	91 (150 में से)
RAJASTHAN VDO 2021	27 दिसंबर (1st शिफ्ट)	59 (100 में से)
RAJASTHAN VDO 2021	27 दिसंबर (2nd शिफ्ट)	61 (100 में से)
RAJASTHAN VDO 2021	28 दिसंबर (1st शिफ्ट)	56 (100 में से)
RAJASTHAN VDO 2021	28 दिसंबर (2nd शिफ्ट)	57 (100 में से)
U.P. SI 2021	14 नवम्बर 2021 1st शिफ्ट	91 (160 में से)
U.P. SI 2021	21नवम्बर2021 (1st शिफ्ट)	89 (160 में से)

& Many More Exams like REET, UPSC, SSC Etc.

दोस्तों, इनका proof देखने के लिए नीचे दी गयी लिंक पर क्लिक करें या हमारे youtube चैनल पर देखें –

RAS PRE. – https://www.youtube.com/watch?v=p3_i-3qfDy8&t=136s

VDO PRE. – https://www.youtube.com/watch?v=gXdAk856W18&t=202s

Patwari – https://www.youtube.com/watch?v=X6mKGdtXyu4&t=103s

अन्य परीक्षाओं में भी इसी तरह प्रश्न आये हैं Proof देखने के लिए हमारे youtube चैनल (Infusion Notes) पर इसकी वीडियो देखें या हमारे नंबरों पर कॉल करें।

FREE SAMPLE

संपर्क करें- 9887809083, 8233195718, 9694804063, 8504091672

ONLINE ORDER के लिए OFFICIAL WEBSITE	Website- https://bit.ly/3rd-grade-mains-notes
PHONE NUMBER	+918504091672 9887809083 +918233195718 9694804063
TELEGRAM CHANNEL	https://t.me/infusion_notes
FACEBOOK PAGE	https://www.facebook.com/infusion.notes
WHATSAPP करें	https://wa.link/hx3rcz

FREE SAMPLE
INFUSION NOTES
WHEN ONLY THE BEST WILL DO

भारतीय अर्थव्यवस्था

अध्याय – I

अर्थव्यवस्था के क्षेत्रक

अर्थशास्त्र की मूलभूत अवधारणायें

परिचय एवं क्षेत्रक :-

- Economics (अर्थशास्त्र) शब्द एक Greek word ' Oikonomia ' से उत्पन्न हुआ है ।
- Oikonomia शब्द Oikos and Nomos दो शब्दों से मिलकर बना है ।
- Oikos का अर्थ गृह अथवा परिवार जबकि Nomos का का अर्थ है प्रबंधन । अर्थात् Oikonomia गृह प्रबंधन की प्रक्रिया के अध्ययन से संबंधित है ।
- यह कहा जा सकता है कि अर्थशास्त्र भी गृह प्रबंधन की इसी प्रक्रिया का अध्ययन करता है।
- यह इस बात का अध्ययन करता है कि किस प्रकार एक परिवार अपने सीमित संसाधनों का प्रयोग कर अपने व्यय को पूरा करता है , परन्तु यह अर्थशास्त्र की सबसे साधारण परिभाषा है । अन्य शब्दों में कहा जा सकता है कि अर्थशास्त्र एक विषय है , जो वस्तुओं और सेवाओं के उत्पादन वितरण एव उपभोग की प्रक्रिया का अध्ययन करता है ।
- अर्थशास्त्र की विषय वस्तु अर्थव्यवस्था है एवं वस्तुओं तथा सेवाओं के वितरण एवं उपभोग से ही अर्थव्यवस्था का निर्माण होता है ।
- एडम स्मिथ (Adam Smith: 1723-1790) को अर्थशास्त्र का जनक (Father of Economics) कहा जाता है।
- उनकी पुस्तक द वेल्थ ऑफ नेशन्स (The wealth of Nations : 1776) में अर्थशास्त्र को धन का विज्ञान कहा गया है।
- भारतीय अर्थशास्त्र का जनक कौटिल्य को माना जाता है।

अर्थशास्त्र और अर्थव्यवस्था में अंतर :-

अर्थशास्त्र	अर्थव्यवस्था
अर्थशास्त्र के अंतर्गत विषय और सिद्धांतों का अध्ययन किया जाता है	अर्थव्यवस्था के अंतर्गत व्यवहार का अध्ययन किया जाता है।
अर्थशास्त्र केवल अध्ययन का क्षेत्र है	अर्थव्यवस्था निष्पादन (Execution) की भूमिका निभाती है।
अर्थशास्त्र के पिता एडम स्मिथ को माना जाता है इनकी किताब (The Wealth of nations) मे अर्थव्यवस्था का विस्तार किया है।	जब हम किसी देश को उसकी समस्त आर्थिक क्रियाओं के संदर्भ में परिभाषित करते है तो उसे अर्थव्यवस्था कहते हैं ।
अर्थशास्त्र की दो शाखाएँ हैं- (i) व्यष्टि अर्थशास्त्र (Micro economics) (ii) समष्टि अर्थशास्त्र (Macro economics)	अर्थव्यवस्था को तीन भागों में बांटा गया है पूँजीवादी अर्थव्यवस्था, समाजवादी अर्थव्यवस्था और मिश्रित अर्थव्यवस्था।
	अर्थव्यवस्था किसी देश या क्षेत्र विशेष में अर्थशास्त्र के व्यावहारिक स्वरूप को प्रदर्शित करती है जैसे भारतीय अर्थव्यवस्था चीनी अर्थव्यवस्था एवं अमेरिकी अर्थव्यवस्था इत्यादि ।

अर्थव्यवस्था के प्रकार :-

A. पूँजीवादी अर्थव्यवस्था (Capitalist Economy):-

- जिस अर्थव्यवस्था में उत्पादन के साधनों पर निजी स्वामित्व पाया जाता है तथा वस्तुओं एवं सेवाओं का उत्पादन निजी लाभ के लिए किया जाता है उसे पूँजीवादी अर्थव्यवस्था कहते हैं।
- अर्थात् यहाँ आर्थिक गतिविधियों पर सरकार का न्यूनतम नियंत्रण होता है तथा निजी क्षेत्र अधिक प्रभावकारी एवं स्वतंत्र होता है।

का युक्तियुक्त उपयोग नहीं हो सका है, जैसे- अफ्रीकी देश।

बन्द अर्थव्यवस्था (Closed Economy):-

- *वे अर्थव्यवस्था जो बाह्य अर्थव्यवस्था से किसी भी प्रकार से सम्बंध नहीं रखती है अर्थात् आयात-निर्यात की गतिविधियाँ शून्य होती हैं उन्हें बन्द अर्थव्यवस्था कहते हैं। Ex.*

खुली अर्थव्यवस्था (Open Economy):-

- *खुली अर्थव्यवस्था वह अर्थव्यवस्था होती है जो विश्व के अन्य देशों के साथ वस्तुओं एवं सेवाओं के व्यापार एवं निवेश के लिए स्वतंत्र होती है जैसे - वर्तमान में विश्व की लगभग सभी अर्थव्यवस्थाएँ खुली अर्थव्यवस्थाएँ हैं।*

अर्थव्यवस्था के क्षेत्रक:-

प्राथमिक क्षेत्र (Primary Sector):-

- *अर्थव्यवस्था का यह क्षेत्र जहाँ प्राकृतिक संसाधनों को कच्चे तौर पर प्राप्त किया जाता है अर्थात् इसके अंतर्गत अर्थव्यवस्था के प्राकृतिक क्षेत्रों का लेखांकन किया जाता है प्राथमिक क्षेत्र कहलाता है।*
- *इसे कृषि एवं सम्बद्ध गतिविधियों से संबंधित क्षेत्र भी कहा जाता है।*
- *इसमें निम्न क्षेत्र शामिल हैं। जैसे- कृषि एवं संबद्ध क्षेत्र, मत्स्य पालन, वानिकी, खनन एवं उत्खनन*

द्वितीयक क्षेत्र:-

- *अर्थव्यवस्था का यह क्षेत्र जो प्राथमिक क्षेत्र से प्राप्त उत्पादों को अपनी गतिविधियों में कच्चे माल (Raw Material) की तरह उपभोग करता है द्वितीयक क्षेत्र कहलाता है।*
- *इसे औद्योगिक क्षेत्र भी कहा जाता है।*
- *जैसे- निर्माण, भवन, विनिर्माण, कपड़ा, इलेक्ट्रॉनिक वस्तुएँ।*

तृतीयक क्षेत्र (Tertiary Sector):-

- *इस क्षेत्र में विभिन्न प्रकार की सेवाओं का उत्पादन किया जाता है।*
- *इसलिए इस क्षेत्र को सेवा क्षेत्र भी कहा जाता है; जैसे - व्यापार, होटल, भण्डारण, बीमा, व्यापार।*

परीक्षोंपयोगी महत्वपूर्ण तथ्य

- *भारतीय अर्थव्यवस्था एक मिश्रित अर्थव्यवस्था है जबकि मध्यप्रदेश राज्य की अर्थव्यवस्था कृषि-प्रधान अर्थव्यवस्था है ।*
- *भारत एक विकासशील देश है।*
- *बंद अर्थव्यवस्था के अंतर्गत आयात एवं निर्यात बिल्कुल संभव नहीं है ।*
- *खुली अर्थव्यवस्था के अंतर्गत बिना प्रतिबंध के वस्तुओं और सेवाओं का व्यापार होता है ।*
- *पूँजीवादी अर्थव्यवस्था में वस्तुओं और सेवाओं का उत्पादन स्वतंत्र रूप से होता है ।*
- *व्यवसायिक बौद्धिक पूँजी के स्वामित्व को ट्रेड मार्क कहा जाता है ।*
- *निर्माण एवं विनिर्माण वित्तीय क्षेत्र के अंतर्गत आते हैं ।*
- *कृषि एवं संबद्ध क्षेत्र,वानिकी मत्स्यन तथा खनन एवं उत्खनन प्राथमिक क्षेत्र के अंतर्गत आते हैं ।*
- *वर्ष 1776 में एडम स्मिथ द्वारा प्रकाशित पुस्तक 'द वेल्थ ऑफ नेशंस' थी ।*
- *बैंकिंग बीमा चिकित्सा शिक्षा पर्यटन आदि तृतीयक क्षेत्र से संबंधित हैं ।*
- *भारत में जनसंख्या की अधिकता के कारण यहाँ से आधिक्य की स्थिति रहती है ।*

NOTE- *अमेरिकी थिंक टैंक वर्ल्ड पॉपुलेशन रिव्यू ने 2019 की रिपोर्ट के अनुसार भारत अर्थव्यवस्था के मामले में ब्रिटेन और फ्रांस को पीछे छोड़ दुनिया में 5वें नंबर पर आ गया है। वर्ष 2018 में भारत 7वें नंबर पर था।*

अध्याय – 6

मुद्रा एवं बैंकिंग

भारत में बैंकिंग

- भारत में स्थापित पहली बैंक Bank of Hindustan थी इसकी स्थापना Alexandey and Company 1770 ई. में की थी कुछ समय बाद यह बैंक बंद हो गई।
- इसके बाद देश में निजी और सरकारी अंशधारियों द्वारा तीन प्रेसीडेन्सी बैंकों की स्थापना की गई - वर्ष 1806 में बैंक ऑफ बंगाल (Bank of Bengal.) , वर्ष 1840 में बैंक ऑफ बॉम्बे (Bank of Bombay) तथा वर्ष 1843 में बैंक ऑफ मद्रास (Bank of Madras) ।
- इन तीनों बैंकों पर बैंक ऑफ मद्रास अपना नियंत्रण रखती थी । बाद में इन बैंकों के कार्यों को सीमित कर दिया गया । वर्ष 1921 में इन तीनों बैंकों को मिलाकर इम्पीरियल बैंक ऑफ इंडिया (Impe rial Bank of India) की स्थापना की गई और । जुलाई, 1955 को राष्ट्रीयकरण के उपरान्त इसका नाम बदलकर स्टेट बैंक ऑफ इंडिया रख दिया गया ।
- भारत में पहली सीमित देयता वाला भारतीय बैंक अवध कमर्शियल बैंक था जिसकी स्थापना फैजाबाद में वर्ष 1881 में की गयी थी ।
- उसके बाद वर्ष 1894 में लाहौर में पंजाब नेशनल बैंक की स्थापना हुई जो पहला पूर्ण रूप से प्रथम भारतीय बैंक था ।

भारत में स्थापित प्रमुख बैंक व उनकी स्थापना

बैंक का नाम	स्थापना वर्ष
द बैंक ऑफ हिन्दुस्तान	1770
बैंक ऑफ बंगाल	1806
बैंक ऑफ बॉम्बे	1840
बैंक ऑफ मुद्रास	1843
इलाहाबाद बैंक	1865
एलाइन्स बैंक ऑफ शिमला	1881
अवध कॉमर्शियल बैंक	1881
पंजाब नेशन बैंक	1894
बैंक ऑफ इंडिया	1906
पंजाब एंड सिंध बैंक	1908
बैंक ऑफ बडौदा	1909
सेण्ट्रल बैंक ऑफ इंडिया	1911
बैंक ऑफ मैसूर	1913
इम्पीरियल बैंक ऑफ इंडिया	1921
भारतीय रिजर्व बैंक	1935
भारतीय स्टेट बैंक	1955

• मुद्रा के आधुनिक रूप

मुद्रा (Money)

- मुद्रा वह केंद्र है जिसके चारों ओर किसी भी देश की अर्थव्यवस्था की चक्रीय गति होती है। आर्थिक प्रणाली में मुद्रा का एक महत्वपूर्ण कार्य 'वस्तुओं तथा सेवाओं के लेनदेन को सरल बनाना है ।
- इसमें बैंकों की विशेष भूमिका होती है। मिल्टन फ्रीडमैन के अनुसार, "मुद्रा ऐसी कोई भी संपत्ति है जिसमे क्रयशक्ति के अस्थाई निवास के रूप में कार्य करने की क्षमता हो।"

मुद्रा के प्रकार (Type of Money)

मुद्रा के दो प्रकार हैं जो निम्नलिखित हैं -

(A) वैधानिक मुद्रा (Legal currency)

वह मुद्रा जिसका निर्गमन सरकार या भारतीय रिजर्व बैंक ने किया है। वैधानिक मुद्रा में रिजर्व बैंक धारक को उतनी रकम अदा करने का वचन देता है, जितने मूल्य की करेंसी है।

(B)साख मुद्रा (Credit money)

वर्ष 1977 में इमरजेंसी हटने के बाद चुनाव हुए और केन्द्र में मोरारजी देसाई के नेतृत्व में जनता पार्टी की सरकार बनी। 16 जनवरी, 1978 को मोरारजी सरकार ने एक कानून बनाकर 1000, 5000 और 10,000 के नोट बंद कर दिए।
इसके बाद 8 नवम्बर, 2016 को प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने पुराने 500 और 1000 की मुद्रा बंद कर दिए और नए 500 रुपये के नोट पेश किये।

रुपए का अवमूल्यन

- अर्थशास्त्र में किसी मुद्रा के अवमूल्यन का मतलब होता है उसकी कीमत का किसी दूसरी मुद्रा के मुकाबले कम कर देना। इसे ऐसे समझे कि अगर रुपए का अवमूल्यन होता है तो इसका मतलब होगा कि अब एक डॉलर खरीदने के लिए आपको ज्यादा रुपये खर्च करने पड़ेगे यानी रुपए की कीमत कम हो जायेगी।
- किसी देश द्वारा मुद्रा की विनिमय दर अन्य देशों की मुद्राओं की तुलना में जानबूझ कर इसलिए कम की जाती है ताकि निवेश को बढ़ावा मिल सके। इससे अंतरराष्ट्रीय बाजार में अपने देश के सामानों की कीमत दूसरे देशों के मुकाबले कम हो जाती है और निर्यात बढाया जा सकता है।
- रुपये का सर्वप्रथम अवमूल्यन 20 सितम्बर, 1949 को हुआ जब रुपए का 30.5 प्रतिशत अवमूल्यन कर दिया गया। उस समय के अवमूल्यन का एक खास तथा महत्वपूर्ण नुकसान यह हुआ था कि भारत ने 1951 में अमेरिका से जो गेहूँ मंगाया था उसकी 30.5 प्रतिशत ज्यादा कीमत देनी पड़ी थी तथा जनता को वास्तु - मूल्यों से महेंगाई का कष्ट उठाना पड़ा।
- भारतीय रुपए का दूसरा अवमूल्यन 6 जून, 1966 को किया गया। इस बार रुपए का 36.5 प्रतिशत अवमूल्यन किया गया।
- नब्बे के दशक के शुरआती दौर में भारत के सामने भुगतान संतुलन का गम्भीर संकट पैदा हो गया और 1991 में देश को विश्व की चार प्रमुख मुद्राओं (Pound Sterling , Ameri can Dollar , Japanese Yen and German Mark) की तुलना में दो बार रुपए का अवमूल्यन करना पड़ा। (1 जुलाई, 1991 को रुपए का तीसरी बार 90 प्रतिशत अवमूल्यन किया गया था। 3 जुलाई, 1991 को रुपए का चौथी बार 110 प्रतिशत अवमूल्यन किया गया)।
- देश उस समय महँगाई, कम वृद्धि दर और विदेशी मुद्रा की कमी से जूझ रहा था। विदेशी मुद्रा तीन हफ्तों के आयात के लिए भी पर्याप्त नहीं थी। ऐसे हालात में रुपए का अवमूल्यन करके उसकी कीमत 17.9 रुपए प्रति डॉलर निर्धारित की गयी।

मुद्रा आपूर्ति के उपाय

- किसी विशेष समय पर जनता के बीच प्रचलित धन की कुल मात्रा मुद्रा आपूर्ति कहलाता है।
- भारत में मुद्रा आपूर्ति के उपायों को M0 के साथ चार श्रेणियों M1, M2, M3 और M4 में वर्गीकृत किया गया है।
- यह वर्गीकरण अप्रैल, 1977 में भारतीय रिजर्व बैंक द्वारा किया गया था।

रिजर्व मनी-Reserve Money (M0): इसे हाई-पावर्ड मनी, मौद्रिक आधार, आधार धन आदि के रूप में जाना जाता है।

M0 = प्रचलन में मुद्रा + RBI के पास बैंकर्स डिपॉजिट + RBI के पास अन्य डिपॉजिट। यह अर्थव्यवस्था का मौद्रिक आधार है।

नैरो मनी-Narrow Money (M1)= प्रचलन में मुद्रा + बैंकिंग प्रणाली के साथ डिमांड डिपॉजिट (करेंट अकाउंट, सेविंग्स अकाउंट) + RBI के पास अन्य डिपॉजिट

M2 = M1 + डाकघर बचत बैंकों की बचत जमा

ब्रॉड मनी-Broad Money (M3)= M1 + बैंकिंग प्रणाली के साथ टाइम डिपॉजिट

M4 = M3 + डाकघर बचत बैंकों के पास सभी प्रकार के डिपॉजिट

बिटक्वाइन

- वर्ष 2009 में शुरू हुई विश्व की पहली डिजिटल करेंसी बिटक्वाइन जापान में। अप्रैल, 2017 से वैध कर दी गई। इसके जरिए अब वहाँ सेवाओं और वस्तुों की खरीद फरोख्त की जा सकेगी।
- इसके लिए जापान में कानून भी बनाया गया है। इस गुप्त करेंसी पर सरकारी नियन्त्रण नहीं होता।

RBI ने किसी भी कम्पनी को बिना मुद्राएँ जारी करने के लिए अधिकृत नहीं किया है । यह मुद्रा इस पर काम करने वाले उपयोगकर्ताओं के अपने जोखिम पर है ।

भारतीय रिजर्व बैंक

- भारत का केन्द्रीय बैंक है ।
- वर्ष 1930 में केन्द्रीय बैंकिंग जाँच समिति की सिफारिश के आधार पर भारत के केन्द्रीय बैंक के रूप में रिजर्व बैंक ऑफ इंडिया (R.B.I.) की स्थापना RBI अधिनियम, 1934 के तहत् । अप्रैल , 1935 को 5 करोड़ रुपये की अधिकृत पूँजी से हुई थी ।
- 1 जनवरी, 1949 को भारतीय रिजर्व बैंक का राष्ट्रीयकरण कर दिया गया । इसके प्रथम गवर्नर सर ओसबोर्न स्मिथ (1935-37) थे ।
- देश के स्वतंत्रता के समय में RBI के गर्वनर सर सी डी . देशमुख (1943-49) थे ।
- रिजर्व बैंक के कार्यों का संचालन केन्द्रीय संचालक मण्डल (Central Borad of Directors) द्वारा होता है ।
- सम्पूर्ण देश में इसे चार भागों में बाँटा गया है - उत्तरी क्षेत्र , दक्षिणी क्षेत्र , पूर्वी क्षेत्र तथा पश्चिमी क्षेत्र ।
- इसमें प्रत्येक के लिए 5 सदस्यों का एक स्थानीय बोर्ड (Local board) होता है ।
- केन्द्रीय बोर्ड में 1 गवर्नर तथा अधिक से अधिक 4 डिप्टी गवर्नर होते हैं , जिनकी नियुक्ति केन्द्र सरकार पाँच वर्षों के लिए करती है ।
- वर्तमान में RBI के 25वें गवर्नर शक्तिकांत दास (12 दिसम्बर, 2018 से लगातार)है।
- स्थानीय बोर्डों के कार्यालय नई दिल्ली , चेन्नई , कोलकाता और मुम्बई में है ।
- स्थानीय बोर्ड केन्द्रीय बोर्ड के आदेशानुसार कार्य करते हैं ।
- रिजर्व बैंक का प्रधान अथवा केन्द्रीय कार्यालय मुम्बई में स्थित है ।
- नई दिल्ली , कोलकाता तथा चेन्नई में स्थानीय प्रधान कार्यालय है ।

RBI के कार्य

भारत में नए नोट जारी करने की व्यवस्था

- एक रुपये के नोट का सभी सिक्कों को छोड़कर रिजर्व बैंक को विभिन्न मूल्य वर्ग के नोटों को जारी करने का एकाधिकारक प्राप्त है ।
- रिजर्व बैंक सरकार के प्रतिनिधि के रूप में एक रुपए के नोटों तथा सिक्कों एवं छोटे सिक्कों का देशे में वितरण का कार्य करता है ।
- करेन्सी नोट जारी करने के लिए वर्तमान में रिजर्व बैंक नोट प्रचालन की न्यूनतम निधि पद्धति (Minimum Reserve System) को अपनाता है । इस पद्धति के अंतर्गत रिजर्व बैंक के पास स्वर्ण एवं विदेशी ऋणपत्र कुल मिलाकर किसी भी समय 200 करोड़ रुपये के मूल्य से कम नहीं होने चाहिए । इनमें स्वर्ण का मूल्य (धातु तथा मुद्रा मिलाकर) 115 करोड़ रुपए से कम नहीं होना चाहिए । यह पद्धति रिजर्व बैंक ने 1957 के बाद अपनाई थी ।

> **NOTE**-नए नोट छापने की एक अन्य व्यवस्था भी हैं परन्तु इसका प्रयोग भारत में नहीं होता यह व्यवस्था अनुपाती आरसी व्यवस्था है (Prahetional Resere system) इसके अन्तर्गत जिस अनुपात में नए नोट का मूल्य बढ़ता हैं उसी अनुपात में रखे गए कोष को बढाना पड़ता हैं
>
> **NOTE** – 1000 रुपये के नोटों का परिचालन 8 नवम्बर, 2016 से बंद हो गया है।

NOTE- सिक्के सीमित विधि ग्राह्य (Limited Legal Tender) है । भारत में कागजी नोट असीमित विधि ग्राह्य (Unlimited Le gal Tender) है । इसका अर्थ यह है कि भुगतान का निपटारा करने के लिए सिक्कों का प्रयोग केवल एक सीमा तक ही किया जा सकता है । इसके विपरीत , कागजी नोटों के रूप में भुगतानों का निपटारा करने हेतु उनका प्रयोग असीमित मात्रा में किया जा सकता है ।

अंतरराष्ट्रीय व्यापार के विकास तथा विनिमय दर की स्थिरता को बनाए रखा जा सके ।

कृषि साख की व्यवस्था करना

- कृषि साख की व्यवस्था करने के लिए रिजर्व बैंक ने एक कृषि साख विभाग की स्थापना की है । इस विभाग का मुख्य कार्य कृषि साख से सम्बन्धित समस्याओं के बारे में अनुसंधान करना है ।

समाशोधन - गृह का कार्य करना

- रिजर्व बैंक देश का केन्द्रीय बैंक है । यह बैंकों को समाशोधन गृह (Clearing House) की सुविधा प्रदान करता है । यह कार्य करके रिजर्व बैंक सदस्य बैंकों में रुपए के स्थानान्तरण को सुविधाजनक बनाता है ।

• साख की विभिन्न स्थितियाँ

साख का नियंत्रण करना

- साख तथा मुद्रा पर नियंत्रण करने के लिए रिजर्व बैंक देश में मुद्रा तथा साख की माँग व पूर्ति के मध्य संतुलन स्थापित करने का प्रयास करता है । देश में मौद्रिक स्थायित्व लाने के लिए यह एक महत्वपूर्ण कार्य है ।

औद्योगिक वित्त की व्यवस्था में सहायता करना

- रिजर्व बैंक ने ' औद्योगिक वित्त निगम ' तथा ' राज्य वित्त निगमों ' के बड़ी मात्रा में अंश खरीद रखे हैं । आवश्यकता पड़ने पर वह दीर्घकालीन व मध्यकालीन ऋण भी प्रदान करता है ।

आर्थिक व्यवस्था से सम्बन्धित समक एकत्रित करना

- रिजर्व बैंक मुद्रा , साख , बैंकिंग , वित्त , कृषि एवं औद्योगिक उत्पादन आदि से सम्बन्धित आँकड़े एकत्रित करता है और उन्हें प्रकाशित करता है । ये आँकड़े देश की विभिन्न आर्थिक समस्याओं को समझने में सहायता देते है ।

भारत की वर्तमान करेन्सी व्यवस्था

- भारतीय करेन्सी व्यवस्था की इकाई रुपया है जिसमें कागजी करेन्सी और सिक्के दोनों प्रचलित हैं । सिक्के एवं एक रुपये का नोट (जिस पर वित्त सचिव , भारत सरकार के हस्ताक्षर होते हैं) भारत सरकार निर्गत करती है , जबकि 2 ,5 ,10,20,50, 100, 500 तथा 2,000 रुपये के करेन्सी नोट भारतीय रिजर्व बैंक निर्गत करता है ।

साख नियंत्रण (Control of Credit)

- रिजर्व बैंक साख के नियंत्रण एवं नियमन हेतु दो प्रकार के का प्रयोग करता है

(A) परिमाणात्मक या मात्रात्मक साख नियंत्रण

(B) गुणात्मक साख नियंत्रण

(A) परिमाणात्मक विधियाँ

- इनके द्वारा एक अर्थव्यवस्था की कुल मुद्रा पूर्ति / साख को प्रभावित किया जा सकता है । इनके द्वारा साख के प्रवाह को न तो अर्थव्यवस्था के किसी खास क्षेत्र की ओर निर्देशित किया जाता है और न ही सीमित किया जाता है । ये विधियाँ निम्न हैं-

बैंक दर (Bank Rate)	• भारतीय रिजर्व बैंक जिस ब्याज दर पर व्यावसायिक बैंकों को दीर्घकालीन ऋण उपलब्ध कराता है, बैंक दर कहलाता है । • **प्रभाव-** बैंक दर में परिवर्तन का प्रभाव प्रत्यक्ष रूप से व्यावसायिक बैंकों द्वारा आवंटित ऋणों की ब्याज दर पर पड़ता है । इसके अन्तर्गत रिजर्व बैंक के पास अनुसूचित बैंकों की कुल वैधानिक जमाराशि के एक निश्चित प्रतिशत के बराबर उनके मूल कोटे निर्धारित कर दिया गया । • निर्धारित कोटे की सीमा तक रिजर्व बैंक से बैंक दर पर ऋण लिया जा सकता है । इससे अधिक ऋण देने पर बैंक

	दर के अतिरिक्त ब्याज की दंड दर (Penal rate) देनी पड़ती है । • बैंक दर में वृद्धि या कमी व्यावसायिक बैंक द्वारा आवंटित ऋणों पर ब्याद दर कम या ज्यादा करने के लिए होता है । • **NOTE :** बेस रेट वह दर है जिसके नीचे अनुसूचित वाणिज्यिक बैंक किसी भी तरह का ऋण नहीं दे सकते हैं । यह वर्ष 2010 में पूर्व प्रचलित प्राइम लैंडिंग रेट नोट (PLR) के स्थान पर अपनाया गया है
नकद आरक्षण अनुपात (Cash Reserve Ratio)	• प्रत्येक व्यापारिक बैंक अपनी कुछ जमाओं का एक निर्धारित प्रतिशत रिजर्व बैंक के पास सदैव नकद रूप में रखता है जिसे नकद आरक्षण अनुपात (CRR) कहते हैं । • रिजर्व बैंक इस नकद पर कोई ब्याज बैंक को नहीं देता है । जब रिजर्व बैंक साख मुद्रा वृद्धि करना चाहता है , तो वह इस अनुपात में कमी कर देता है । और यदि वह साख मुद्रा में कमी करना चाहता है , तो वह इस अनुपात में वृद्धि कर देता है ।
वैधानिक तरलता अनुपात (Statutory Liquidity Ratio)	• प्रत्येक बैंक को कुल जमाराशि के एक निश्चित प्रतिशत को अपने पास नकद रूप में या अन्य तरल परिसम्पत्तियों के रूप में (सोना अनुमोदित प्रतिभूतियाँ- सरकारी प्रतिभूतियाँ) रखना पड़ता है जिसे वैधानिक तरलता (SLR) कहा जाता है । • यदि रिजर्व बैंक को साख मुद्रा का प्रसार करना होता है , तो इस अनुपात को कम कर दिया जाता है , ताकि बैंकों के पास तरल कोषों में वृद्धि हो सके । • यदि साख का संकुचन करना होता है , तो इस अनुपात को बढ़ा दिया जाता है , ताकि बैंकों के पास तरल कोष कम उपलब्ध हो ।
रेपो दर (Repo Rate)	• रेपो दर वह दर है जिस पर रिजर्व बैंक बैंकों को अल्पकालीन ऋण देकर अर्थव्यवस्था में तरलता की अतिरिक्त मात्रा जारी करता है । • इसका प्रभाव व्यावसायिक बैंकों द्वारा आवंटित ऋणों पर प्रत्यक्ष रूप से पड़ता है । • इसका प्रयोग तात्कालिक मुद्रा के प्रसार में वृद्धि या कमी के लिए किया जाता है । • मंदी के दौरान रेपो दर में कटौती की जाती है ताकि मुद्रा के प्रसार में वृद्धि हो । ज्यों - ज्यों मंदी का दौर खत्म होता है, रेपो दर से वृद्धि की जाती है ताकि तात्कालिक मुद्रा का प्रसार कम हो ।
रिवर्स रेपो दर (Reverse Repo Rate)	• यह रेपो दर से उल्टी होती है । बैंकों के पास दिनभर के कामकाज के बाद बहुत बार एक बड़ी रकम शेष बच जाती है । बैंक वह रकम अपने पास रखने के बजाए रिजर्व बैंक

बारहवीं पंचवर्षीय योजना (2012-17 ई.)

- गैर कृषि क्षेत्र 50मिलियन नए काम के अवसर पैदा करना
- 0-3 साल के बच्चों के बीच कुपोषण को कम करना
- वर्ष 2017 तक सभी गांवों को बिजली उपलब्ध कराना
- ग्रामीण आबादी के 50% जनसँख्या को उचित पेयजल की सुविधा उपलब्ध कराना
- हर साल 1 मिलियन हेक्टेयर क्षेत्र में पेड़ लगाकर हरियाली फैलाना
- देश के 90%परिवारों को बैंकिंग सेवाओं से जोड़ना

अध्याय – 9

राजस्थान में कृषि एवं विपणन

कृषि उपज मंडी

राजस्थान की कृषि

ऋतु के आधार पर

- **खरीफ की फसलें**
  - खरीफ की प्रमुख फसलें धान, मक्का, ज्वार, मूंग, मूंगफली, लोबिया, कपास, जूट, बाजरा, ग्वार, तिल, मोठ आदि हैं।

  (ब) खरीफ की फसलों की बुवाई जुलाई में और कटाई अक्टूबर महीने में की जाती है।
- **रबी की फसलें**
  - रबी की प्रमुख फसलें जौ, राई, गेहूँ, जई, सरसों, मैथी, चना, मटर आदि हैं।
  - (ब) रबी की फसल की बुवाई अक्टूबर में तथा कटाई अप्रैल महीने में की जाती हैं।
- **जायद की फसलें**
  - जायद की प्रमुख फसलों में तरबूज, खरबूजा, टिंडा, ककड़ी, खीरे, मिर्च आदि हैं।
  - (ब) जायद की फसल की बुवाई मार्च में तथा कटाई जून महीने में की जाती हैं।
  - उपयोग के आधार पर
- **खाद्यान फसलें** - राजस्थान की खाद्यान फसलें गेहूँ, चावल (धान), बाजरा, जौ, मक्का, ज्वार, दलहन, तिलहन प्रमुख हैं।
- **वाणिज्यिक फसलें** - राजस्थान की वाणिज्यिक फसलें कपास और गन्ना हैं।
  - राजस्थान में खाद्यान्नों में गेहूं, जौ, चावल, मक्का, बाजरा, ज्वार, रबी एवं खरीफ की दलहन फसलें शामिल हैं।

गेहूं

- राज्य में सर्वाधिक क्षेत्र में खाद्यान्न फसल के रूप में गेहूं बोया जाता है। गेहूं को बोये जाने के समय तापमान कम से कम 8° से 10° सें. तक होना

चाहिए तथा पकने के समय तापमान 15° से 20° सें. तक होना चाहिए।

- 50 सेमी. से 100 सेमी. के बीच वर्षा की आवश्यकता होती है। राजस्थान में साधारण गेहूं (ट्रीटीकम) एवं मेकरोनी गेहूं (लाल गेहूं) सर्वाधिक पैदा होता है। गेहूं उत्पादन के प्रमुख क्षेत्र पूर्वी एवं दक्षिणी-पूर्वी राजस्थान के जयपुर, अलवर, कोटा, गंगानगर, हनुमानगढ़ और सवाई माधोपुर जिलें हैं।
- राजस्थान में सर्वाधिक गेहूं गंगानगर जिलें में उत्पादित होता है इसलिए गंगानगर जिला अन्न का भण्डार कहलाता है।
- नाइट्रोजन युक्त दोमट मिट्टी, महीन काँप मिट्टी व चीका प्रधान मिट्टी गेहूं उत्पादन हेतु उपयुक्त होती है। मिट्टी का ph मान 5 से 7.5 के मध्य होना चाहिए।
- राजस्थान में दुर्गापुरा-65,कल्याण सोना, मैक्सिकन, सोनेरा, शरबती, कोहिनूर, सोनालिका, गंगा सुनहरी, मंगला, कार्निया-65 ,लाल बहादुर , चम्बल-65, राजस्थान-3077 आदि किस्में बोई जाती हैं।
- गेहूं में छाछ्या, करजवा, रतुआ, चेपा रोग पाए जाते हैं।
- इण्डिया मिक्स- गेहूं, मक्का व सोयाबीन का मिश्रित आटा।

जौ

- राजस्थान में जौ उत्पादन क्षेत्रफल लगभग 2.5 लाख हेक्टेयर है।
- भारत के कुल उत्पादन का 1/4 भाग राजस्थान में पैदा होता है। जौ शीतोष्ण जलवायु का पौधा है तथा रबी की फसल है।
- जौ की बुवाई के समय लगभग 10° सें. तापमान की आवश्यकता है तथा काटते समय 20° से 22° सेन्टीग्रेड तापमान होना चाहिए।
- जौ के लिए शुष्क और बालू मिश्रित काँप मिट्टी उपयुक्त रहती है।
- जौ की प्रमुख किस्में ज्योतिराजकिरण, R-D. 2503, मोल्वा आदि हैं। राजस्थान में प्रमुख जौ उत्पादन जिलें जयपुर (सर्वाधिक), उदयपुर, अलवर, भीलवाड़ा व अजमेर हैं।
- जौ का उपयोग मिसी रोटी बनाने, मधुमेह रोगी के उपचार, शराब व बीयर बनाने, माल्ट उद्योग में किया जाता है।

बाजरा

- विश्व का सर्वाधिक बाजरा भारत में पैदा होता है। बाजरे के उत्पादन एवं क्षेत्रफल में राजस्थान का भारत में प्रथम स्थान है। राजस्थान देश का लगभग एक तिहाई बाजरा उत्पादित करता है।
- बाजरा राजस्थान में सर्वाधिक क्षेत्र पर बोई जाने वाली खरीफ की फसल है।
- बाजरा के लिए शुष्क जलवायु उपयुक्त रहती है।
- बाजरे की बुवाई मई, जून या जुलाई माह में होती है। बाजरे की बुवाई करते समय तापमान 35° से 40° सेन्टीग्रेड तक होना चाहिए।
- बाजरे के लिए 50 सेमी. से कम वर्षा उपयुक्त रहती है। बाजरा बलुई, बंजर, मरुस्थलीय तथा अर्द्ध काँपीय मिट्टी में पैदा होता है।
- बाजरा की प्रमुख किस्में ICTP - 8203,WCC - 75,राजस्थान - 171,RHB - 30,RHB - 58,RHB - 911, राजस्थान बाजरा चरी-2 हैं। बाजरा को जोगिया, ग्रीन ईयर, कण्डुआ, सूखा रोग नुकसान पहुँचाते हैं।
- केन्द्र सरकार द्वारा अखिल भारतीय समन्वित बाजरा सुधार परियोजना व मिलेट डायरेक्टोरेट को क्रमशः पूना व चेन्नई से जोधपुर व जयपुर स्थानांतरित किया गया है। दो नए केन्द्र बीकानेर एवं जोधपुर में स्थापित किए गए हैं।

मक्का

- भारत के कुल मक्का उत्पादन का 1/8 भाग राजस्थान में उत्पादित होता है। मक्का मुख्यतः खरीफ की फसल है।
- ऊष्ण एवं आर्द्र जलवायु मक्का के लिए उपयुक्त रहती है। मक्का की बुवाई करते समय औसत तापमान 21° से 27° सेन्टीग्रेड तक होना चाहिए।
- मक्का के लिए 50 सेमी. से 80 सेमी. तक वर्षा की आवश्यकता रहती है। मक्का के लिए नाइट्रोजन व जीवाँ शयुक्त मिट्टी, दोमट मिट्टी अधिक उपयुक्त रहती है।

- **कृषि उपज मंडियाँ –**

1. जीरा मंडी - मेड़ता सिटी (नागौर)
2. संतरा मंडी - भवानी मंडी (झालावाड़)
3. कीन्नू व माल्टा मंडी - गंगानगर
4. प्याज मंडी - अलवर
5. अमरूद मंडी - सवाई माधोपुर
6. ईसबगोल (घोड़ाजीरा) मंडी - भीनमाल (जालौर)
7. मूंगफली मंडी - बीकानेर
8. धनिया मंडी - रामगंज (कोटा)
9. फूल मंडी - अजमेर
10. मेहंदी मंडी - सोजत (पाली)
11. लहसून मंडी - छीपाबाडौद (बांरा)
12. अश्वगंधा मंडी -झालरापाटन (झालावाड़)
13. टमाटर मंडी - बस्सी (जयपुर)
14. मिर्च मंडी - टोंक
15. मटर (बसेड़ी) - बसेड़ी (जयपुर)
16. टिण्डा मंडी - शाहपुरा (जयपुर)
17. सोनामुखी मंडी - सोजत (पाली)
18. आंवला मंडी - चोमू (जयपुर)

राजस्थान में प्रथम निजी क्षेत्र की कृषि मण्डी कैथून (कोटा) में आस्ट्रेलिया की ए.डब्लू.पी. कंपनी द्वारा स्थापित की गई है।

राजस्थान में कृषि विश्वविद्यालय

1. स्वामी केशवानंद कृषि विवि, बीकानेर
2. महाराणा प्रताप कृषि तकनीकी विवि, उदयपुर
3. कृषि विवि, जोधपुर
4. कृषि विवि, जोबनेर जयपुर
5. कृषि विवि, कोटा
6. केंद्रीय शुष्क क्षेत्र उद्यानिकी अनुसंधान केंद्र, बीकानेर

- **सार्वजनिक वितरण प्रणाली (पीडीएस)**

- सार्वजनिक वितरण प्रणाली (पीडीएस) कम कीमत पर अनाज के वितरण और आपातकालीन स्थितियों में प्रबंधन सुनिश्चित करने के लिये लाई गई एक प्रणाली है।
- इस प्रणाली की शुरुआत वर्ष 1947 में हुई है और यह देश में गरीबों के लिये सब्सिडी दरों पर खाद्य तथा अखाद्य पदार्थों के वितरण का कार्य करता है।
- इसे भारत सरकार के उपभोक्ता मामले, खाद्य और सार्वजनिक वितरण मंत्रालय के तहत स्थापित किया गया है और इसे केंद्र व राज्य सरकारों द्वारा संयुक्त रूप से प्रबंधित किया जाता है।
- 'फूड कॉर्पोरेशन ऑफ इंडिया' पीडीएस के लिये खरीद और रखरखाव का कार्य करता है जबकि राज्य सरकारों को राशन एवं अन्य आवश्यक वस्तुओं का वितरण सुनिश्चित करना होता है।

पीडीएस की पृष्ठभूमि

- गौरतलब है कि वर्ष 1992 तक पीडीएस बिना किसी विशिष्ट लक्ष्य के सभी उपभोक्ताओं के लिये चलाई जाने वाली एक सामान्य पात्रता वाली योजना थी।
- वर्ष 1992 से पीडीएस को आरपीडीएस (revamped PDS) यानी सुधरा हुआ पीडीएस कहा जाने लगा जिसमें गरीब परिवारों खासकर दूर-दराज़, पहाड़ी और दुर्गम क्षेत्रों में रहने वाले गरीबों पर विशेष ध्यान दिया गया।
- वहीं 1997 में आरपीडीएस, टीपीडीएस (targeted PDS) यानी लक्षित पीडीएस बन गया, जिसमें सब्सिडी दरों पर अनाज के वितरण के लिये फेयर शॉप की स्थापना की गई।

वर्तमान

हाल ही में उपभोक्ता मामले, खाद्य एवं सार्वजनिक वितरण मंत्रालय ने कहा है कि भारत सरकार की 'एक देश, एक राशन कार्ड' (One Nation, One Ration Card) योजना राज्यों में कार्य कर रही सार्वजनिक वितरण प्रणाली (पीडीएस) को नकारात्मक रूप में प्रभावित नहीं करेगी, बल्कि एक देश, एक राशन कार्ड सार्वजनिक वितरण प्रणाली को एक नया आयाम प्रदान करेगी।

परिचय

देश में लोगों को विभिन्न आवश्यक वस्तुओं की आपूर्ति को उचित कीमतों पर व उचित समय पर उपलब्ध करवाने तथा उनके पोषण के उचित स्तर को बनाये रखने के लिए सार्वजनिक वितरण प्रणाली (Public Distribution System- PDS) को एक प्राथमिक उपकरण (Intrument) के रूप में प्रयोग किया गया है। भारत में सार्वजनिक वितरण प्रणाली (पीडीएस) का इतिहास स्वतंत्रता के पहले द्वितीय विश्व युद्ध के प्रारंभ (सन् 1939) से माना जाता है। उस समय औपनिवेशिक सरकार ने गरीबों को कुछ चुने हुए शहरों में सस्ती दरों पर अनाज उपलब्ध कराया था। इसके बाद समय-समय पर जरुरतों के मुताबिक पीडीएस का स्वरूप बदलता रहा। आज भारत में सार्वजनिक वितरण प्रणाली को केन्द्र एवं राज्य सरकारों द्वारा समवर्ती सूची के अंतर्गत सामूहिक रूप से संचालित किया जाता है। इस संदर्भ में केन्द्र सरकार की भूमिका आवश्यक वस्तुओं का अधिग्रहण (Procurement), उनका भंडारण तथा उन्हें बड़ी मात्रा में गंतव्य स्थान तक पहुँचाने की होती है, जबकि राज्य सरकारों की भूमिका गंतव्य स्थान से वस्तुओं को उठाने एवं उन्हें उचित मूल्य की दुकानों (Fair Price Shops- FPSs) तक पहुँचाने तथा उपभोक्ताओं तक वितरित करने की होती है। एक आँकड़े के मुताबिक वर्तमान में पूरे देश में 5 लाख से भी अधिक उचित मूल्य की दुकानों (Fair Price Shops- FPSs) का नेटवर्क है।

राष्ट्रीय खाद्य सुरक्षा अधिनियम (NFSA), 2013:

- 'राष्ट्रीय खाद्य सुरक्षा अधिनियम, 2013' को 5 जुलाई, 2013 को अधिसूचित किया गया था।
- इसके तहत 'लक्षित सार्वजनिक वितरण प्रणाली' (Targeted Public Distribution System- TPDS) के अंतर्गत सब्सिडी युक्त खाद्यान्न प्राप्त करने के लिये 75%ग्रामीण आबादी और 50% शहरी आबादी के कवरेज़ का प्रावधान है।
- इस अधिनियम के तहत राशन कार्ड जारी करने के लिये किसी परिवार की 18 वर्ष से अधिक सबसे वरिष्ठ महिला को परिवार के मुखिया के रूप में माना जाता है।

लक्षित सार्वजनिक वितरण प्रणाली (Targeted Public Distribution System)

PDS प्रणाली की विफलता के बाद गरीबों को लाभ पहुँचाने और बजटीय खाद्य सब्सिडी को वांछित सीमा तक नियंत्रित रखने के उद्देश्य से 1997 में लक्षित सार्वजनिक वितरण प्रणाली (TDPS) शुरू की गई।

अवधारणात्मक रूप में सार्वभौमिक PDS से TDPS की ओर संक्रमण सही दिशा में उठाया गया कदम था, क्योंकि इसे सभी गरीब परिवारों को शामिल करने और उनके लिये इकाई सब्सिडी एवं राशन कोटा बढ़ाने के लिये डिज़ाइन किया गया था।

TDPS का उद्देश्य गरीबी रेखा से नीचे के लोगों को PDS से अत्यधिक रियायती कीमतों पर और गरीबी रेखा से ऊपर के लोगों को अपेक्षाकृत अधिक मूल्य पर खाद्यान्न प्रदान करना है।

इस प्रकार भारत सरकार द्वारा अपनाई गई TDPS योजना भी PDS के समान ही है, लेकिन यह गरीबी रेखा से नीचे के लोगों पर विशेष ध्यान केंद्रित करती है।

राष्ट्रीय खाद्य सुरक्षा अधिनियम, 2013 (NFSA) को अधिसूचित किया गया है जो कि देश की 75% ग्रामीण आबादी और 50% शहरी आबादी को अत्यधिक सब्सिडी वाले खाद्यान्न प्राप्त करने के दायरे में लाती है।

भारतीय खाद्य निगम (Food Corporation of India- FCI) '

उपभोक्ता मामले, खाद्य एवं सार्वजनिक वितरण मंत्रालय' के खाद्य एवं सार्वजनिक वितरण विभाग के अंतर्गत शामिल सार्वजनिक क्षेत्र का उपक्रम है।

FCI एक सांविधिक निकाय है जिसे भारतीय खाद्य निगम अधिनियम, 1964 के तहत वर्ष 1965 में स्थापित किया गया।

देश में भीषण अन्न संकट, विशेष रूप से गेहूँ के अभाव के चलते इस निकाय की स्थापना की गई थी।

इसके साथ ही कृषकों के लिये लाभकारी मूल्य की सिफारिश करने हेतु वर्ष 1965 में ही कृषि लागत और मूल्य आयोग (Commission for

अध्याय – 10

शिक्षण विधियाँ

सामाजिक अध्ययन की संकल्पना एवं प्रकृति

सामाजिक विज्ञान की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि :-

=> सामाजिक अध्ययन विषय को आरंभ करने का श्रेय अमेरिका को है।

=> आरंभ में सामाजिक अध्ययन का नाम उन विषयों के समुह को दिया गया जिसमें इतिहास, अर्थशास्त्र, राजनीति शास्त्र शामिल थे। यह नामकरण 1892 में हुआ ।

=> बाद में इसमें समाजशास्त्र भी जोड़ा गया।

=> सामाजिक अध्ययन के इस स्वरूप को सरकार की ओर से मान्यता 1916 में 'Committe on the Social Studies of Secondry education '

के प्रतिवेदन में दी गई और इसे एक विषय के रूप में स्वीकार करने का सुझाव दिया गया।

=> 1921 में इस विषय के संबंध में विस्तृत अध्ययन के लिए अमेरिका में राष्ट्रीय विकास परिषद का गठन किया गया।

=> 1934 में 'सामाजिक अध्ययन ' पर एक कमीशन की नियुक्ति की गई। जिसके उपरांत इस क्षेत्र में बहुत से अनुसन्धान हुए और सामाजिक अध्ययन के एकीकृत स्वरूप का विकास हुआ और इसे एक क्षेत्र अध्ययन के रूप में मान्यता दी गई।

=> अमेरिकी विद्यालयों में 1920 से 1955 का समय सामाजिक अध्ययन का स्वर्णकाल माना जाता है।

=> भारत में माध्यमिक शिक्षा आयोग - डॉ. लक्ष्मण स्वामी मुदालियर आयोग (मद्रास विवि के कुलपति की अध्यक्षता में सितंबर 1952) ने छात्रों के सामाजिक वातावरण से अनुकूलन के लिए इस विषय का अध्यापन अनिवार्य माना।

=> भारत में सर्वप्रथम पंजाब सरकार ने अपने शिक्षा सलाहकार बोर्ड की सिफारिश को मानते हुए 1949 ई. राज्य के सभी स्तरो पर सामाजिक अध्ययन का अध्यापन निश्चित किया।

=> वर्ष 1950 - 1965 के मध्य भारत में प्रायः सभी राज्यों में इस विषय को विद्यालयी शिक्षा में शामिल कर लिया गया।

=> 1952 - 53 में मुदालियर आयोग ने सर्वप्रथम विद्यालयों के लिए इस विषय की सिफारिश की। इन्होंने सामाजिक पर्यावरण के एकीकृत विषय के रूप में शुरू किया।

=> इस आयोग ने इतिहास, भूगोल, अर्थशास्त्र, नागरिक शास्त्र आदि विषयों का एक इकाई के रूप में अध्ययन करने की सिफारिश की।

सामाजिक अध्ययन का अर्थ :-

=> सामाजिक अध्ययन शब्द सामाजिक और अध्ययन से मिलकर बना है।

=> सामाजिक का अर्थ समाज के लिए या समाज द्वारा अर्थात समाज द्वारा समाज के लिए अध्ययन

=> सामाजिक अध्ययन के अंतर्गत मनुष्य का मनुष्य से तथा उसका वातावरण के साथ स्थापित संबंधों का अध्ययन किया जाता है।

=> यह मानव जीवन के प्रत्येक पक्ष, सामाजिक, आर्थिक राजनैतिक, ऐतिहासिक को स्पर्श करता है।

=> इसमें विविधता है जो मानव को अनुभव ग्रहण करने में मदद करता है।

सामाजिक अध्ययन की परिभाषाएँ :-

(1) जे. एफ. फारेस्टर :-
"सामाजिक अध्ययन उस समाज का अध्ययन है, जिसमें रहकर छात्रों का सर्वांगीण विकास होता है। "

(2) NCERT के अनुसार :-
"सामाजिक अध्ययन मनुष्यों तथा सामाजिक और भौतिक वातावरणों के प्रति उनकी प्रतिक्रियाओं का अध्ययन है। "

(3) जेम्स हामिंग महोदय :-

वाद-विवाद विधि के गुण

वाद-विवाद पद्धति के द्वारा छात्र क्रियाशील बने रहते हैं।

छात्रों की निर्णय-शक्ति, कल्पना-शक्ति और तर्क-शक्ति का विकास इस पद्धति द्वारा आसान हो जाता है।

छात्र मिल-जुलकर कार्य करने की ओर प्रेरित होते हैं।

छात्रों में सामुदायिकता की भावना उत्पन्न होती है।

यह छात्रों में स्वस्थ प्रतियोगिता की भावना का विकास करती है।

वाद-विवाद पद्धति में छात्रों में विचारों की क्रमबद्धता, तारतम्यता तथा अभिव्यंजना शक्ति का विकास करती है।

यह छात्रों में सहयोग, सहानुभूति और सहिष्णुता की भावना का विकास करती है।

छात्रों को विषय-वस्तु का चयन करने और उसको संगठित करने की योग्यता प्रदान करती है ।

वाद-विवाद विधि के दोष

इस विधि से कुछ ही छात्र लाभान्वित होते हैं तथा शेष निष्क्रिय श्रोता ही रह जाते हैं।

निरर्थक और अनुपयोगी वाद-विवाद में पड़कर अमूल्य समय नष्ट होने की सम्भावना में रहती है।

लज्जाशील एवं पिछड़े बालक इस विधि से प्रगति नहीं कर पाते हैं।

छोटी कक्षाओं के लिए यह विधि अव्यावहारिक है।

इस विधि से मूल्यांकन करने में व्यक्तिगत राग-द्वेष और पक्षपात की सम्भावना हमेशा बनी रहती है।

अप्रशिक्षित और अकुशल अध्यापक वाद-विवाद का संचालन ठीक प्रकार से नहीं कर पाते।

इस विधि से सम्पूर्ण पाठ्यक्रम समय के अन्तर्गत समाप्त नहीं हो पाता है।

अनेक वाद-विवाद में विषयान्तर हो जाता है।

निरीक्षण विधि

निरीक्षण से तात्पर्य है- किसी वस्तु, घटना या स्थिति का सावधानीपूर्वक अवलोकन करना। अतः इस विधि में बालक किसी वस्तु, स्थानीय स्थिति को देखकर ही उसके बारे में ज्ञान प्राप्त करता है।

अमेरिका में वाटसन ने इस विधि का उपयोग बालकों के प्राथमिक संवेगो के अध्ययन में किया।

यंग के अनुसार

निरीक्षण नेत्रों द्वारा सावधानी से किए गए अध्ययन को सामूहिक व्यवहार जटिल सामाजिक संस्थाओं और किसी पूर्ण वस्तु को बनाने वाली प्रथम इकाइयों का निरीक्षण करने के लिए एक विधि के रूप में उपयोग किया जा सकता है।

मौंसर के अनुसार

निरीक्षण को उचित रूप से वैज्ञानिक पूछताछ की श्रेष्ठ विधि कहा जा सकता है। ठोस अर्थ में निरीक्षण में कानून और वाणी की अपेक्षा नेत्रों का उपयोग होता है।

गेसेल ने इस विधि में मूविंग पिक्चर कैमरा का उपयोग किया और व्यवहार चित्रों के विश्लेषण के बालकों के व्यवहार के संबंध में शुद्ध परिणाम प्राप्त किए। इस अध्ययन में उन्होंने एक तरफा दिखाई देने वाले पदों का उपयोग किया।

इनके द्वारा सिर्फ निरीक्षक बालक को देखते हैं बालक निरीक्षक को नहीं। निरीक्षण विधि में इस प्रकार एकतरफा दिखाई देने वाले कैमरे का उपयोग निरीक्षण कक्ष में किया जाता है।

. यह विधि 'देखकर सीखना' सिद्धांत पर आधारित है।

यह एक समूह प्रक्रिया है जिसके कुछ नियम होते हैं। उनके अनुसार प्रस्तावना व मत विभाजन की क्रिया जारी रहती है। छात्र संसद इसका ही एक रूप है।

4. गोलमेज वार्तालाप :- इसमें सदस्यों की संख्या सीमित होती है एक गोल मेज के चारों तरफ जितने सदस्य सुविधा पूर्वक बैठ सके उतने ही सदस्य बैठकर विमर्श करते हैं।

***विमर्श के लाभ**

=> सहयोगीपूर्वक कार्य करने की विधा का विकास होगा।

=> विमर्श से निर्णय क्षमता, तथा आत्मविश्वास का विकास होता है।

=> विमर्श के द्वारा शिक्षक छात्रों की बुद्धि परीक्षा, मौखिक कौशल नेतृत्व क्षमता जैसे गुणों की परीक्षा करता है।

शिक्षण अधिगम सामग्री एवं सहायक सामग्री

=> शिक्षण सहायक सामग्री शिक्षण का वह साधन है जिससे शिक्षार्थियों को किसी विषय का अधिगम करना बहुत आसान हो जाता है।

=> अधिगम की प्रक्रिया में शिक्षक विविध एवं विभिन्न शिक्षण पद्धतियों एवं विधियों द्वारा अधिगम करता है इस कार्य हेतु शिक्षण सहायक सामग्री अत्यंत उपयोगी होती है।

*शिक्षण सहायक सामग्री के महत्व :-

=> शिक्षण सहायक सामग्री शिक्षण को प्रभावशाली और ज्ञान को स्थिर बनाते हैं।

=> इनके उपयोग से कक्षा की नीरसता खत्म हो जाती है।

=> शिक्षण सहायक सामग्रियों के उपयोग से जटिल एवं सूक्ष्म ज्ञान को सरलता से समझा जा सकता है।

=> इससे शिक्षार्थी अधिगम की प्रक्रिया में सक्रिय रहते हैं।

***शिक्षण अधिगम के प्रकार :-**

- मनोवैज्ञानिक आधार पर -

1. परंपरागत सामग्री
2. श्रव्य - दृश्य सामग्री

- तकनीकी आधार पर वर्गीकरण -

1. कठोर उपागम
2. मृदुल उपागम

- ज्ञानेन्द्रियों के आधार पर -
  1. श्रव्य साधन
  2. दृश्य साधन
  3. दृश्य - श्रव्य साधन

***मनोवैज्ञानिक आधार पर शिक्षण सामग्री :-**

1. परम्परागत सामग्री :- वे सहायक सामग्री जिनका प्रयोग प्रारंभिक समय से किया जा रहा है। जैसे कि - श्यामपट्ट, पुस्तकें, पत्र - पत्रिकाएँ आदि।
2. श्रव्य - दृश्य सामग्री :- सामाजिक अध्ययन में सबसे उपयोगी सामग्री, फिल्म, स्लाइड, एपीडायस्कोप (चित्र विस्तारक यंत्र)

तकनीकी आधार पर शिक्षण सामग्री :-

1. **कठोर उपागम :-** वे सहायक सामग्री जिसको बनाने और उपयोग करने के लिए तकनीकी ज्ञान आवश्यक होता है।
   जैसे - Projector, फिल्म पट्टियां (Flim Strip), Computer अध्यापन मशीन आदि।

2. **मृदुल उपागम :-** वे सहायक सामग्री जिन्हे अध्यापक स्वयं बनाकर प्रयोग कर सकता है।

जैसे :- चित्र, रेखाचित्र, चार्ट, ग्राफ, मानचित्र, पोस्टर, प्रतिमान आदि।

ज्ञानइन्द्रियों के आधार पर

वर्गीकरण :-

1. **श्रव्य साधन :-**
   इस सामग्री के प्रयोग से छात्र सुनकर मन में शब्द चित्रों का निर्माण करता है। इनमें उपकरणों का प्रयोग सुनने के लिए होता है।

नोट – प्रिय उम्मीदवारों, यहाँ हमने केवल SAMPLE ही दिया है, पूरा टॉपिक नही दिया है / यदि आपको हमारे नोट्स के सैंपल अच्छे लगे हों तो कम्पलीट नोट्स खरीदने के लिए नीचे दिए गये हमारे संपर्क नंबर पर कॉल कीजिए या लिंक पर क्लिक करें / दोस्तों, हमें पूर्ण विश्वास है कि ये नोट्स आपकी "राजस्थान 3rd Grade Level – 2 (REET मुख्य परीक्षा)" में पूर्ण संभव मदद करेंगे और आप "INFUSION NOTES" के साथ इस परीक्षा में जरूर सफल होंगे, धन्यवाद /

संपर्क करें – 8233195718, 8504091672, 9694804063, 9887809083,

प्रिय दोस्तों, अब तक हमारे नोट्स में से अन्य परीक्षाओं में आये हुए प्रश्नों के परिणाम –

EXAM (परीक्षा)	DATE	हमारे नोट्स में से आये हुए प्रश्न
RAS PRE. 2021	27 अक्तूबर	74 प्रश्न आये
REET (लेवल -I, 2)	2021	98 (150 में से)
SSC GD 2021	16 नवम्बर	68 (100 में से)
SSC GD 2021	30 नवम्बर	66 (100 में से)
SSC GD 2021	01 दिसम्बर	65 (100 में से)
SSC GD 2021	08 दिसम्बर	67 (100 में से)
राजस्थान S.I. 2021	13 सितम्बर	113 (200 में से)
राजस्थान S.I. 2021	14 सितम्बर	119 (200 में से)

FREE SAMPLE

राजस्थान S.I. 2021	15 सितम्बर	126 (200 में से)
RAJASTHAN PATWARI 2021	23 अक्टूबर (1st शिफ्ट)	79 (150 में से)
RAJASTHAN PATWARI 2021	23 अक्टूबर (2nd शिफ्ट)	103 (150 में से)
RAJASTHAN PATWARI 2021	24 अक्टूबर (1st शिफ्ट)	95 (150 में से)
RAJASTHAN PATWARI 2021	24 अक्टूबर (2nd शिफ्ट)	91 (150 में से)
RAJASTHAN VDO 2021	27 दिसंबर (1st शिफ्ट)	59 (100 में से)
RAJASTHAN VDO 2021	27 दिसंबर (2nd शिफ्ट)	61 (100 में से)
RAJASTHAN VDO 2021	28 दिसंबर (1st शिफ्ट)	56 (100 में से)
RAJASTHAN VDO 2021	28 दिसंबर (2nd शिफ्ट)	57 (100 में से)
U.P. SI 2021	14 नवम्बर 2021 1st शिफ्ट	91 (160 में से)
U.P. SI 2021	21नवम्बर2021 (1st शिफ्ट)	89 (160 में से)

& Many More Exams like REET, UPSC, SSC Etc.

दोस्तों, इनका proof देखने के लिए नीचे दी गयी लिंक पर क्लिक करें या हमारे youtube चैनल पर देखें –

RAS PRE. – https://www.youtube.com/watch?v=p3_i-3qfDy8&t=136s

VDO PRE. – https://www.youtube.com/watch?v=gXdAk856W18&t=202s

Patwari – https://www.youtube.com/watch?v=X6mKGdtXyu4&t=103s

अन्य परीक्षाओं में भी इसी तरह प्रश्न आये हैं Proof देखने के लिए हमारे youtube चैनल (Infusion Notes) पर इसकी वीडियो देखें या हमारे नंबरों पर कॉल करें।

FREE SAMPLE

संपर्क करें- 9887809083, 8233195718, 9694804063, 8504091672

ONLINE ORDER के लिए OFFICIAL WEBSITE	Website- https://bit.ly/3rd-grade-mains-notes
PHONE NUMBER	+918504091672 9887809083 +918233195718 9694804063
TELEGRAM CHANNEL	https://t.me/infusion_notes
FACEBOOK PAGE	https://www.facebook.com/infusion.notes
WHATSAPP करें	https://wa.link/hx3rcz

FREE SAMPLE
INFUSION NOTES
WHEN ONLY THE BEST WILL DO